ओ३म्

प्राचीन भारत में

रामायण के मन्दिर



—विरजानन्द दैवकरणि

 B-1

श्री कीर्तिकान्त जी शर्मा को
सेवा में सादर
— विज्ञानन्द
७/५/२००८ ई.

ओ३म्

प्राचीन भारत में रामायण के मन्दिर

लेखक
विरजानन्द दैवकरणि



प्रकाशक
हरयाणा प्रान्तीय पुरातत्त्व संग्रहालय,
गुरुकुल झज्जर, हरयाणा

हरयाणा सरकार द्वारा प्रदत्त अनुदान से प्रकाशित

प्रकाशक—हरयाणा प्रान्तीय पुरातत्त्व संग्रहालय, गुरुकुल झज्जर

संस्करण	:	प्रथम संस्करण	१०००
		विक्रम संवत्	२०६४
		ईसवी सन्	२००७

मूल्य : २०० रुपये

मुद्रक :

आचार्य प्रिंटिंग प्रेस

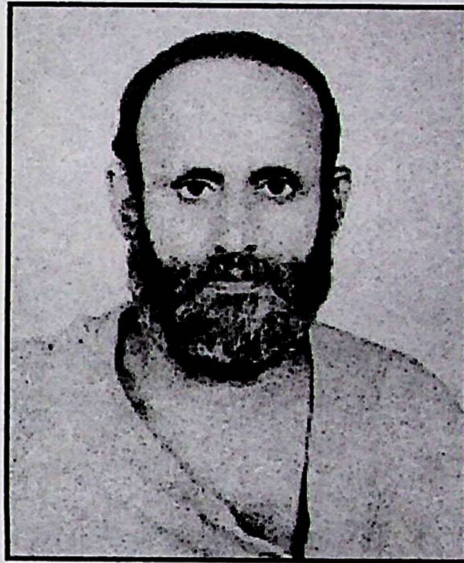
दयानन्दमठ, गोहाना रोड,

रोहतक-१२४००१

दूरभाष : ०१२६२-२७६८७४

मोबाइल—९२५४०५३१११

समर्पण



श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती

जिनकेसान्निध्य में अन्तेवासी रूप से रहकर

पुरातत्त्व और इतिहास सम्बन्धी

ज्ञान प्राप्त किया, उन्हीं श्रद्धेय

गुरुवर्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती

की सेवा में रामायण मृन्मूर्ति विषयक यह ग्रन्थ

सादर समर्पित

है

विनीत :

विरजानन्द दैवकरणि

विषय सूची

--****--

Prof. Lokesh Chandra
MEMBER OF PARLIAMENT
(RAJYA SABHA) 1974-86

J-22 Hauz Khas Enclave
New Delhi-110016
Tel : 2651-5800



लोकशचन्द्र
जे २२ हौज़ खास एंक्लेव
नई दिल्ली-११००१६

प्राक्कथन

स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की विराट् सांस्कृतिक, राजनैतिक और सामाजिक सेवाओं के उत्तराधिकारी श्री विरजानन्द जी दैवकरणि हैं। स्वामी जी ने जीवन पर्यन्त पुरातत्त्व की अनमोल निधि एकत्र की। यह हर्याणा राज्य और समस्त भारत की ऐतिहासिक धरोहर का जाज्वल्यमान रत्न है। इसे समझने, इस पर विधिवत् अनुसंधान करके प्रकाशित करने का दुष्कर और घोर अध्यवसाय श्री विरजानन्द जी कर रहे हैं। इसके हेतु विद्वत्समाज और संस्कृतिप्रेमी उनके ऋणी हैं। स्वामी ओमानन्दजी के विलक्षण संग्रह में कई अनोखी और एकमात्र पुरावस्तुएं हैं जो इतिहास के यथोचित मूल्यांकन के लिए अपरिहार्य महत्त्व की हैं। श्री विरजानन्दजी स्वामीजी के शिष्य और उनके अथक परिश्रम के उत्तराधिकारी, प्राचीन शास्त्रों में, मुद्रा-विज्ञान, मूर्तिशिल्प शिलालेखवाचन आदि में निष्णात होने के कारण संग्रह की रक्षा के साथ-साथ उसको विश्व में प्रसारित करने में सतत संलग्न हैं।

रामायण भारत का आदिकाव्य है जो वाल्मीकि के शोक से श्लोक में परिणत हुआ। नए छन्द के साथ-साथ जीवन-मूल्यों और गहन संस्कारों की अभिव्यक्ति के कारण, भाषा के सहज प्रवाह और लालित्य से, साहित्यिक जगत् की शिरोमणि कृति है। भारतीय हृदयों को उद्वेलित करती हुई रामायण की कथा राजा से रंक, कवि से अनपढ़ तक, समूचे समाज को अनुप्राणित करती रही है। स्वाभाविक ही था कि प्रत्येक युग में रामायण की मृन्मूर्तियां बनीं, पाषाण में उकेरी गई तथा लेखन साधनों पर भी उसका चित्रण हुआ।

श्री विरजानन्द जी ने प्रस्तुत पुस्तक में ४२ कृतियों का वर्णन किया है। भगवान् राम की कालगणना का विवादास्पद, परन्तु रामायण की व्यापकता के प्रेरणा-प्रसंगों की चर्चा की गई है। भगवान् राम का परम्परागत कालनिर्णय श्री विरजानन्दजी ने स्पष्ट दिया है। रामायण भारतीय संस्कृति के साथ अनेक देशों में गई और आज भी थाइदेश, कम्बोडिया, लावदेश, इण्डोनेशिया आदि देशों में प्रतिदिन इसका अभिनय होता है। भारतवर्ष में रामलीला वर्ष में कुछ दिन होती है परन्तु दक्षिणपूर्व के देशों में यह दैनिक अभिनय का अंश है। उनकी सांस्कृतिक धरोहर का सर्वोत्तम स्वरूप होने के कारण पर्यटकों के लिए इसका मञ्चन किया जाता है।

श्री विरजानन्दजी ने रामायण के संस्कार का वर्णन किया है और भारत की विभिन्न भाषाओं

में रचित महाकाव्यों का विवरण दिया है। संस्कृत साहित्य के अनेक ग्रन्थों में आई राम-कथा की चर्चा की है। आधुनिक भारतीय भाषाओं के साहित्य में रामायण पर आधारित कृतियों का उल्लेख है। विवादास्पद तत्त्वों का प्रतिपादन भी किया है–क्या हनुमान् आदि मनुष्य थे अथवा बन्दर। सबसे महत्त्वपूर्ण अंश मृन्मूर्तियों का विवेचन है। उनके प्राप्ति स्थान, चित्रित दृश्य और उनकी वाल्मीकि रामायण से तुलना। पृष्ठ ३३-३४ पर श्री विरजानन्दजी ने ४३ मृन्मूर्तियों का उल्लेख किया है। इनमें से ३७ मूर्तियां गुरुकुल झज्जर संग्रहालय में सुरक्षित हैं। सम्भवतः गुरुकुल झज्जर में सबसे बड़ा संग्रह है। भारतीय इतिहास, पुरातत्त्व, कला और साहित्य के अन्वेषकों के लिए गुरुकुल झज्जर का संग्रहालय सारस्वत तीर्थस्थान है। श्री विरजानन्दजी की प्रस्तुत कृति से अनुसंधान-कर्त्ताओं को एक नई, भव्य परन्तु अल्पज्ञात, संस्था का पता चलेगा। आज रामसेतु आदि विवाद के कारण जनमानस में जिज्ञासा और कौतुहल का अपूर्व संचार है। इस प्रसंग में श्री विरजानन्दजी की पुस्तक से कई प्रश्नों के उत्तर मिलेंगे-परम्परा और पुरातत्त्व का क्या साक्ष्य है।

श्री विरजानन्दजी महत्त्वूर्ण और प्रासंगिक कृति पर, रामायण के गहन अध्ययन पर, विद्वानों और रामायण के श्रद्धालुजन सामान्य के बधाई के पात्र हैं। समस्त सामग्री एक ग्रन्थ में पहली बार प्रस्तुत की है और सबके स्पष्ट और बड़े आकार के चित्र दिए गए हैं। भगवान् राम और महर्षि वाल्मीकि श्री विरजानन्दजी को इस ग्रन्थरत्न के लिए अपनी आशिषः प्रदान करें। श्री विरजानन्दजी गुरुकुल झज्जर की धरोहर को क्रमशः प्रकाशित करने में सफल हों जिससे कि हमारे गौरवमय इतिहास की झांकी नित नूतन रहे।

डा. लोकेशचन्द्र

१२-१०-२००७

ओ३म्

भूमिका

भारतवर्ष के प्रायः सभी प्रान्तों में प्राचीन ऐतिहासिक खण्डहर दबे पड़े हैं। इन खण्डरों में प्राचीन भारतीय इतिहास की महत्त्वपूर्ण सामग्री प्रचुर मात्रा में छुपी हुई है। उत्तरप्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, राजस्थान, पंजाब आदि प्रान्तों में विद्यमान अनके स्थलों की खुदाई से पर्याप्त ऐतिहासिक सामग्री प्राप्त हो चुकी है।

हरयाणा प्रान्त में इस दिशा में अतिस्वल्प कार्य हुआ है। इसीलिए हरयाणा का प्राचीन इतिहास विद्वानों के समक्ष नहीं आ सका है। हरयाणा प्रान्त के प्रत्येक जिले में प्राचीन ऐतिहासिक स्थल पर्याप्त मात्रा में स्थित हैं परन्तु उनकी विधिवत् खुदाई नहीं हुई है। खोखराकोट, नौरंगाबाद, अगरोहा, मीताथल, सुघ, बनावली, कुणाल, बालू, भिड़ताना, हाठ आदि स्थानों में अति सीमित रूप से उत्खनन कार्य हुआ है और इनका भी विवरण अभी तक अप्रकाशित-सा ही है।

खण्डहरों की खुदाई भारत सरकार अपने अधीन विभागों से ही करवाती है। कोई निजी संस्था प्राचीन ऐतिहासिक स्थलों का उत्खनन नहीं करवा सकती। इसीलिये पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती (आचार्य भगवान्देव जी) ने हरयाणा प्रान्त के ऐतिहासिक स्थलों पर जा-जाकर बच्चों और किसानों से यह निवेदन किया कि खण्डहर पर पशु चराते समय, खेतों में हल जोतते समय अथवा खण्डहरों से ईंटें निकालते समय जो भी पुरावशेष मिले वह हमें दे दिया करो। उसके लिए जितने रुपये वह मांगता उतने रुपये दे-देकर सामग्री संग्रह करते-करते गुरुकुल झज्जर में एक विशाल पुरातत्त्व संग्रहालय का निर्माण हो गया।

इसी अन्वेषण कार्य को करते हुए एक दिन आचार्य जी नचारखेड़ा (दुर्जनपुर हिसार) में जा पहुंचे। वहां के शिवमन्दिर की सीढ़ियों में उलटाकर रक्खा हुआ रामायण के दृश्यवाला मिट्टी का पका हुआ एक फलक प्राप्त हुआ। इससे उत्साहित होकर स्वामी जी ने अन्यत्र भी उद्योग किया। फलतः जींद, हाठ, कटिंघरा (एटा), अहिच्छत्रा (बरेली), कौशाम्बी (प्रयाग) और भादरा (राजस्थान) आदि स्थलों से रामायण के दृश्यवाली अनेक मृन्मूर्तियाँ प्राप्त हुईं। इन मृन्मूर्तियों में राम का पंचवटी गमन, त्रिशिरा राक्षस से युद्ध, सीताहरण, बाली-सुग्रीव युद्ध आदि अनेक घटनाओं को चित्रित किया गया है।

स्वामी ओमानन्द जी की हार्दिक इच्छा थी कि रामायण से सम्बद्ध इन मृन्मूर्तियों को ग्रन्थ रूप में प्रकाशित किया जाना चाहिये। अमेरिका से एक देवी जोयना विलियम्स को भी आचार्य जी ने रामायण के दृश्यों के चित्र दिये थे, परन्तु यह ज्ञान नहीं कि वहां से वह पुस्तक प्रकाशित हुई अथ वा नहीं। अब यह सुयोग बना है कि स्वामी ओमानन्द जी की इच्छानुसार रामायण के दृश्यों से युक्त यह पुस्तक प्रकाशित होकर पाठकों के हाथ में आई है।

इस पुस्तक में नचारखेड़ा, जींद, हाठ, भादरा, कटिंघरा, अहिच्छत्रा और कौशाम्बी से मिली रामायण के दृश्योंवाली मृन्मूर्तियाँ प्रकाशित की गई हैं। कानपुर के पास भी रामायण के दृश्योंवाली मृन्मूर्तियाँ मिली थीं, उनके विषय में ज्ञात नहीं है कि वे किस प्रकार की थी और कहां गई। अमेरिका से भी एक ग्रन्थ प्रकाशित हुआ था, उसमें भी रामायण के दृश्यों की मृन्मूर्तियाँ छपी थीं।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन से हरयाणा प्रान्त के प्रति इतिहासज्ञों का विचार बदलेगा। जो व्यक्ति हरयाणा को प्राचीन इतिहास की सामग्री से शून्य मानते हैं, उनको भी अपने विचारों में परिवर्तन करना चाहिये।

जो विद्वान् रामायण को कल्पित कथा मानते हैं, उन्हें इस पुस्तक के प्रमाणों को देखकर अपने विचारों में बदलाव लाना चाहिये। वाल्मीकिकृत रामायण में जो श्लोक मिलते हैं, वे ही श्लोक इन मृन्मूर्तियों में खुदे

हुए हैं। रामायण के प्रमुख कथानायक श्री राम के गुणों से प्रभावित होकर सारे भारतवर्ष में देवता की भांति उनकी पूजा होने लगी, उसी का यह परिणाम है कि रामायण के कथानकों को दृश्य में परिवर्तित करके मन्दिरों की शोभा बढाई गई। यदि ऐसे स्थलों का पूरा उत्खनन हो तो अति दुर्लभ सामग्री मिल सकती है। भारत सरकार के पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग और विश्वविद्यालयों के इतिहास विभागों को इस ओर रुचि लेकर अन्वेषण करना चाहिये, तभी यह छुपी हुई सम्पदा सबके सन्मुख आ सकती है।

भारतीयों के हृदय में पूज्यभाव से स्थित राम के प्रति सदा से असीम आस्था रही है। भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग के सर्वोच्च अधिकारी उन श्रीराम और उनसे सम्बद्ध प्राचीनतम काव्य रामायण को काल्पनिक कथा कहकर यह शपथपत्र दें कि राम और रामायण का कोई पुरातात्त्विक प्रमाण नहीं है, इससे बड़ी लज्जा और अज्ञान की बात नहीं हो सकती। ऐसे श्रीराम द्वारा निर्मित सेतु को जो कभी भारत और लंका को जोड़ता था और अब भग्न प्रायः होकर समुद्र में डूबा हुआ है, उसे भारत सरकार समूल नष्ट करना चाहती है। यह अत्यन्त निन्दनीय तथा इतिहास से खिलवाड़ करने जैसा दुष्कर्म है। पहले तो जनश्रुति के अनुसार रामसेतु प्रसिद्ध था, परन्तु अब उपग्रह के माध्यम से इस सेतु (पुल) के चित्र लेकर इसे पूर्ण रूप से उजागर कर दिया गया है। भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के सामुद्रिक विभाग को चाहिये कि जैसे भी हो सके इस सेतु को तोड़े जाने से बचाया जाये। अन्यथा ऐतिहासिक और धार्मिक दोनों दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण सेतु को नष्ट करना लज्जाजनक कार्य होगा।

इस पुस्तक में प्रकाशित सामग्री का संग्रह करने में स्वामी ओमानन्द जी के साथ मेरे आदरणीय सतीर्थ्य श्री डॉ॰ योगानन्द जी शास्त्री और मैंने सहयोग किया है। जो सामग्री हमें नहीं मिल पाई, उनके चित्र डॉ॰ योगानन्द जी ने बड़े पुरुषार्थ से संग्रह करके प्रकाशनार्थ दे दिये। इसके लिए मैं इनका आभारी हूँ। इनमें से कुछ चित्र डॉ॰ योगानन्द जी शास्त्री की पुस्तक **'प्राचीन भारत में यौधेय गणराज्य'** में भी प्रकाशित हो चुके हैं।

हरयाणा सरकार के अनुदान से यह ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है, इसलिए राज्य सरकार के हम आभारी हैं।

आशा है इतिहास और पुरातत्त्व के प्रेमीजन इस ग्रन्थ को ऐतिहासिक धरोहर समझकर इसका सही मूल्यांकन करेंगे। इस पुस्तक में दिये गये परिणामों से यदि सहमत न हों तो सूचित करें, उचित और प्रमाणसहित लेखन का सदा सम्मान किया जायेगा, ऐसी सम्मतियां हमारे भावी लेखन कार्य का सम्बल सिद्ध होंगी।

निवेदक
विरजानन्द दैवकरणि
निदेशक

हरयाणा प्रान्तीय पुरातत्त्व संग्रहालय,
गुरुकुल झज्जर
२५ अगस्त २००७ ईसवी

--✱✱✱✱--

श्री रामचन्द्र का काल

श्री रामचन्द्र जी कब उत्पन्न हुए इस विषयक मान्यता में भारतीय और पाश्चात्य परम्परा में आकाश-पाताल का अन्तर है। पाश्चात्य परम्परावाले इतिहास-लेखक प्राचीन भारत में प्रचलित सतयुग, त्रेतायुग आदि कालमान को नहीं मानते। इसलिये ये लोग राम को २००० वर्ष ईसापूर्व मानते हैं।

भारतीय परम्परानुसार श्रीराम चौबीसवें त्रेता युग में हुए हैं।

महाभारत में यद्यपि अनेक प्रक्षेप किये गये हैं। परन्तु उन प्रक्षिप्तांशों में भी ऐतिहासिक तथ्य छुपे हुए मिल जाते हैं। जैसे कि ईश्वर कभी अवतार ग्रहण नहीं करता। परन्तु रामचन्द्रजी को अवतार सिद्ध करने के प्रयास में उसके काल का सत्यांश सुरक्षित रह गया। जैसे–

सन्ध्यांशे समनुप्राप्ते त्रेताया द्वापरस्य च।
अहं दाशरथी रामो भविष्यामि जगत्पतिः ॥८५॥

–महाभारत, शान्तिपर्व, अध्याय ३३९

इस श्लोक में श्रीराम की विद्यमानता त्रेता और द्वापर युग के सन्धिकाल में मानी है। **"विषादप्यमृतं ग्राह्यम्"** इस सूक्ति के अनुसार असत्य में से सत्यांश का ग्रहण कर लेना चाहिये। इसलिए श्रीराम के समय के निश्चयार्थ यह प्रमाण स्वीकार्य है।

इसी प्रकार ब्रह्मपुराण का भी एक प्रमाण है–

चतुर्विंशे युगे रामो वसिष्ठेन पुरोधसा।
सप्तमो रावणस्यार्थे नृपो दशरथात्मजः॥

–ब्रह्मपुराण ७३.९१

त्रेतायुगे चतुर्विंशे रावणस्तपसः क्षयात्।
रामं दाशरथिं प्राप्य सगणः क्षयमेयिवान्॥

वायुपुराण ७०/४८ के इस श्लोक के अनुसार श्री राम और रावण २४वें त्रेतायुग में सिद्ध होते हैं।

श्री राम त्रेतायुग में थे, इसका एक प्रमाण यह भी है–

(त्रेतायुगे) तत्र राजानः सूर्यवंशीय-बाहुक-सगर-अंशुमान्-असमंजस-दिलीप- भगीरथ-अज-दशरथ-रामचन्द्र-कुशी-लवा एते चक्रवर्तिनः।

शब्दकल्पद्रुम (मुद्रांकितपंजिका)

त्रेतायुग में ये ग्यारह चक्रवर्ती राजा हुए हैं।

इन प्रमाणों के अनुसार चौबीसवें त्रेतायुग में राम का होना स्पष्ट सिद्ध है। इन प्रमाणों को न मानकर निजी कल्पना करके राम को अर्वाचीन मानना हठधर्मिता है। यहां चौबीसवें त्रेता युग से सम्बद्ध दो प्रकार की मान्यताएं प्रचलित हैं। इसका स्पष्टीकरण करने के लिए सारे कालमान पर दृष्टिपात करना आवश्यक है।

चार अरब बत्तीस करोड़ वर्षों की अवधिवाली एक सृष्टि में १४ मन्वन्तर होते हैं। इस पृथिवी की

उत्पत्ति से आजतक स्वायम्भुव, स्वारोचिष, औत्तमि, तामस, रैवत, चाक्षुष ये छह मन्वन्तर व्यतीत होकर सातवें वैवस्वत मन्वन्तर की २८वीं चतुर्युगी का कलियुग चल रहा है। इस अट्ठाईसवीं चतुर्युगी से पूर्व २४वीं चतुर्युगी में राम पैदा हुए थे, ऐसी मान्यता चली आ रही है। एक मन्वन्तर में ७१ चतुर्युगियां होती हैं। एक चतुर्युगी सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग इन चारों के मिलने से होती है। आजकल सातवें वैवस्वत मन्वन्तर की २८वीं चतुर्युगी चल रही है।

कलियुग का समय	- ४३२००० वर्ष
द्वापर (कलियुग का दो गुणा)	- ८६४००० वर्ष
त्रेता (कलियुग से तीन गुणा)	- १२९६००० वर्ष
सतयुग (कलियुग से चार गुणा)	- १७२८००० वर्ष
योग	= ४३२०००० तेतालीस लाख बीस हजार वर्ष

४३२०००० वर्षों की एक चतुर्युगी होती है। यदि राम को २४वीं चतुर्युगी के त्रेतायुग की समाप्ति पर मानें तो–

४३२०००० ॱ (२८वीं चतुर्युगी के वर्तमान कलियुग तक) इस प्रकार कह सकते हैं–

२४वीं चतुर्युगी का द्वापरयुग	=	८६४००० वर्ष
२४वीं चतुर्युगी का कलियुग	=	४३२००० वर्ष
(२५, २६, २७वीं तीन चतुर्युगियों का समय)		
४३२००००x३ चतुर्युगियों का समय	=	१२९६०००० वर्ष
२८वीं चतुर्युगी का सतयुग	=	१७२८००० वर्ष
२८वीं चतुर्युगी का त्रेतायुग	=	१२९६००० वर्ष
२८वीं चतुर्युगी का द्वापरयुग	=	८६४००० वर्ष
२८वीं चतुर्युगी का आजतक कलियुग	=	५१०८ वर्ष
योग	=	१८१४९१०८ वर्ष

आज २००७ ईसवी तक कम से कम एक करोड़, इक्यासी लाख, उनञ्चास हजार एक सौ आठ वर्ष पूर्व श्री राम की विद्यमानता सिद्ध होती है।

दूसरे पक्ष में–

त्रेतायुग की लम्बी कालगणना को सुविधानुसार छोटे–छोटे समान भागों में बांट लिया जाता था। तदनुसार इस २८वीं चतुर्युगी के त्रेतायुग के १२९६००० वर्षों को २४ भागों में बांट लिया गया । इस प्रकार एक भाग ५४००० वर्षों का हुआ। उस त्रेता के ५४००० वर्षों के २४वें अर्थात् अन्तिम भाग में (२४वें त्रेता में) राम विद्यमान थे। तदनुसार यदि इस २८वीं चतुर्युगी के त्रेता के अन्त में भी श्री राम को मानें तो उसके बाद–

२८वीं चतुर्युगी का द्वापरयुग	=	८६४००० वर्ष
२८वीं चतुर्युगी का आजतक कलियुग	=	५१०८ वर्ष
योग	=	८६९१०८ वर्ष

आज सन् २००७ ईसवी तक कम से कम आठ लाख, उनहत्तर हजार, एक सौ आठ वर्ष पूर्व तो श्रीराम का काल भारतीय परम्परा के अनुसार अवश्य सिद्ध है। परन्तु पाश्चात्य इतिहासकार तो महाभारत को ही १४०० वर्ष ईसापूर्व मानकर आज से ३४०० वर्ष पूर्व महाभारत की कल्पना करके इससे कुछ पहले श्रीराम को मानते हैं। जबकि भारतीय परम्परा महाभारत को द्वापर युग के अन्त में मानती है, इससे भी महाभारत युद्ध को आज ५१४५ वर्ष हो जाते हैं। इतना पुराना मानने के लिए पाश्चात्य परम्परावादी कभी भी तैयार नहीं होते।

वैसे केवल रामायण-महाभारत के काल की ही बात नहीं है, अपितु सारे मौर्य, शुंग, कुषाण, गुप्त, हर्ष आदि के कालक्रम पर भी शिलालेख और ताम्रलेखों के आश्रय से पुनर्विचार की आवश्यकता है। इस रीति से सत्य सिद्ध होने पर विदेशियों और उनका अन्धानुकरण करनेवाले भारतीयों द्वारा सिद्ध करके माना और प्रचारित किया गया सारा कालक्रम परिवर्तित हो सकता है। भारतीय प्राचीन परम्परा में श्लोकों के द्वारा तिथि संवत् आदि लिखने की परम्परा रही है। संस्कृत भाषा के गूढ़ ज्ञान से रहित व्यक्तियों ने इन श्लोकों का सामान्य अर्थ करके सत्यार्थ का अनर्थ कर दिया है, इसीलिए प्राचीन भारत का सही कालक्रम कल्पनाओं के भीतर उलझ कर रह गया है। अज्ञानान्धकारावृत इस सत्यता को उद्घाटित करके संसार के सम्मुख लाने की महती आवश्यकता है।

--****--

रामायण का महत्त्व तथा विस्तार

भारतीय संस्कृत साहित्य में रामायण को आदिकाव्य के नाम से जाना जाता है। रामायण कथा को जिसने भी एक बार सुन लिया अथवा पढ़ लिया, वह राम के आदर्श चरित्र से प्रभावित हुए बिना नहीं रहा।

रामायण के बालकाण्ड के प्रथम सर्ग में राम के निम्नलिखित गुणों की चर्चा है–

१. गुणवान्, २. वीर्यवान्, ३. धर्मज्ञ, ४. कृतज्ञ, ५. सत्यवाक्य, ६. दृढ़व्रत, ७. चरित्रवान्, ८. सर्वप्राणिहितकारक, ९. आत्मवान्, १०. क्रोधजित्, ११. द्युतिमान्, १२. अनिन्दक, १३. जिसके मन्यु से देव भी डरते हैं, १४. नियतात्मा, १५. महावीर्यवान्, १६. द्युतिमान्, १७. धृतिमान्, १८. वशी, १९. बुद्धिमान्, २०. नीतिमान्, २१. वाग्मी, २२. श्रीमान्, २३. शत्रुविनाशक, २४. विपुलांस, २५. महाबाहु, २६. कम्बुग्रीव, २७. महाहनु, २८. महोरस्क, २९. महेष्वास, ३०. गूढजत्रु, ३१. अरिंदम, ३२. आजानुबाहु, ३३. सुशिर, ३४. सुललाट, ३५. सुविक्रम, ३६. सम, ३७. समविभक्तांग, ३८. स्निग्धवर्ण, ३९. प्रतापवान्, ४०. पीनवक्ष, ४१. विशालाक्ष, ४२. लक्ष्मीवान्, ४३. शुभलक्षण, ४४. सत्यसन्ध, ४५. प्रजाहितरत, ४६. यशस्वी, ४७. ज्ञानसम्पन्न, ४८. शुचि, ४९. वश्य, ५०. समाधिमान्, ५१. प्रजापतिसम, ५२. श्रीमान्, ५३. धाता, ५४. रिपुनिसूदन, ५५. जीवरक्षक, ५६. धर्मरक्षक, ५७. स्वधर्मरक्षक, ५८. स्वजनरक्षक, ५९. वेदवेदांगतत्त्वज्ञ, ६०. धनुर्वेदनिष्ठित, ६१. सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञ, ६२. स्मृतिमान्, ६३. प्रतिभानवान्, ६४. सर्वलोकप्रिय, ६५. साधु, ६६. अदीनात्मा, ६७. विचक्षण, ६८. सज्जनसंगत, ६९. आर्य, ७०. सर्वसम, ७१. प्रियदर्शन, ७२. गम्भीर, ७३. धैर्यवान्, ७४. कालाग्नि, ७५. क्षमावान्, ७६. त्यागी, ७७. सत्यपराक्रम, ७८. श्यामवर्ण, ७९. लोहिताक्ष, ८०. कमलपत्राक्ष।

उपर्युक्त गुणोंवाले राम को रामायण में नर=मनुष्य कहा गया है न कि ईश्वर का अवतार। रामायण कथा को पढ़कर ऐसा प्रयत्न करना चाहिये कि ऐसे अनेक गुण विभूषित श्रीराम के आदर्श जीवन के अनुरूप स्वयं को भी बना सकें।

रामायण के आदर्शों में भ्रातृ प्रेम, पिता की आज्ञा का पालन करना, मानापमान में सम रहना, निष्काम कर्म करना, दुष्टों का ताडन और श्रेष्ठों का सम्मान करना, प्रजा की पालना पुत्रवत् करना, अभिमान और लोभरहित रहना, विपत्ति में धैर्य धारण करना, किये हुए उपकार के प्रति कृतज्ञ रहना, मर्यादा भंग न करना, नीच की संगति से पृथक् रहना, परस्त्री को माता के समान समझना, शत्रु के साथ युद्ध में शूरवीरता दिखाना इत्यादि देवोचित्त गुणों के ग्रहण की शिक्षा मिलती है।

इन्हीं आदर्शों के कारण राम और रामायण लोकप्रिय हो सके हैं। वाल्मीकिकृत रामायण में जीवनोपयोगी सूक्तियों का भण्डार भरा है। रामायण की कथा करनेवाले सज्जनों को ऐसी सूक्तियों को आधार बनाकर कथायें करनी चाहिएं। ऐसा करने से जनता दोषों से दूर होकर सत्कर्मों में संलग्न हो सकती है। ऋषियों ने अपने अनुभूतज्ञान के द्वारा भावी सन्तति को सुखी करने के लिए ऐसी ज्ञानवर्धक बातों का संग्रह रामायण–महाभारत सदृश काव्यों में किया हुआ है। यदि हम इनके उपकार को भुला देंगे तो कृतघ्नता का पाप लगेगा। कृतघ्नता का कोई प्रायश्चित्त नहीं होता। महर्षि वाल्मीकि जी लक्ष्मण के द्वारा सुग्रीव को कहलवाते हैं–

गोघ्ने चैव सुरापे च चौरे भग्नव्रते तथा ।
निष्कृतिर्विहिता सद्भिः कृतघ्ने नास्ति निष्कृतिः ।

रामायण। किष्किन्धाकाण्ड, ३४.१२

जब सुग्रीव ने राम द्वारा बाली का वध करवा दिया और वर्षा काल भी व्यतीत हो गया, पुनरपि उसने सीता अन्वेषण का करने की प्रतिज्ञा पूरी नहीं की तो लक्ष्मण सुग्रीव की भर्त्सना करते हुए कहते हैं–(कृतज्ञ और सत्यवादी राजा का संसार में सम्मान होता है। जो प्रतिज्ञा को मिथ्या करता है वह नृशंसतर है) यदि कोई गोहत्या करदे, मद्यपान=सुरापान करले, चोरी करले, ब्रह्मचर्यव्रत को भंग करदे तो भी सज्जनों ने ऐसे दोष करनेवालों के लिए प्रायश्चित्त का विधान किया है, परन्तु कृतघ्न=किये हुए उपकार को भूल जानेवाले के लिए कोई प्रायश्चित्त नहीं है। सुग्रीव ने श्रीराम के आगे प्रतिज्ञा की थी कि मेरा राज्य और पत्नी वापिस दिला दो तो मैं सीता की खोज करने में आपकी पूरी सहायता करूंगा। परन्तु व्यसनों में फंस कर वह सब प्रतिज्ञा भूल गया और कृतघ्नता का दोषी होगया।

इसलिए रामचन्द्र जी जैसे महापुरुषों ने अपने जीवन के द्वारा जगत् का जो कल्याण किया है, उसके लिए हमें ऐसे सभी परोपकारी महापुरुषों का स्मरण करके इनके प्रति कृतज्ञता का भाव अवश्य दर्शाना चाहिये।

वाल्मीकि-रामायण की रचना के अनन्तर रामायण-युगीन आदर्श और श्रीराम आदि के मर्यादास्थित जीवन और देवदुर्लभ गुणों का भारतीय जनमानस पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। इसीलिये भट्टिकाव्य, अध्यात्मरामायण, बालरामायण, तुलसीरामायण, कम्बरामायण, इलियडरामायण इत्यादि सैंकड़ों ग्रन्थों की रचना रामकथा को आधार बनाकर की गई। द्वापरयुग के अन्त में महर्षि कृष्ण द्वैपायन व्यास द्वारा रचित महाभारत में भी अनेक स्थलों में रामकथा का वर्णन पाया जाता है। जैसे–**महाभारत आदिपर्व, अध्याय २७३-२७२।**

इस उपाख्यान के अतिरिक्त वनपर्व, द्रोणपर्व, शान्तिपर्व इत्यादि अनेक पर्वों में राम की चर्चा है।

श्री राम आदि के विषय में संस्कृत भाषा के महाकवियों ने निम्नलिखित महाकाव्यों की रचनायें की थीं। यथा–

ग्रन्थ	रचियता	ग्रन्थ	रचयिता
१. रघुवंश	महाकवि कालिदास	११. रामचरित (राम रहस्य)	मोहनस्वामी
२. सेतुबन्ध	प्रवरसेन	१२. राघवपाण्डवीयम्	धनञ्जय
३. रावणवध	भट्टि	१३. राघवपाण्डवीयम्	माधवभट्ट
४. जानकीहरण	कुमारदास	१४. रामपालचरित	सन्ध्याकरनन्दी
५. रामचरित	अभिनन्द	१५. रघुनाथचरित	वामन भट्ट बाण
६. दशावतारचरित	क्षेमेन्द्र	१६. रामविहार काव्य	लक्ष्मणाध्वारि
७. रामायण मञ्जरी	क्षेमेन्द्र	१७. भट्टिकाव्य	कवि भट्टि
८. उदारराघव	साकल्य मल्लाचार्य	१८. राघवीय	रामपाणिवाड
९. जानकीपरिणय	कवि चक्र	१९. रामविजय	रघुनाथ उपाध्याय
१०. रामलिंगामृत	कवि अद्वैत	२०. राघवोल्लास	अद्वैत संन्यासी

श्री राम और रामायण को आधार बनाकर संस्कृत में अनेक नाटकों की रचना की गई। जैसे–

१. प्रतिमा-नाटक	महाकवि भास	३. महावीरचरित	भवभूति
२. अभिषेक-नाटक	महाकवि भास	४. उत्तररामचरित	भवभूति

श्री राम के गुणों को आधार बनाकर रचे गये स्फुट काव्य भी संस्कृत भाषा में उपलब्ध हैं। यथा–

५. अनर्घराघव	मुरारि	२३. कनकजानकी	क्षेमेन्द्र
६. उन्मत्तराघव	विरूपाक्ष	२४. रघुविलास	रामचन्द्र
७. उन्मत्तराघव	भास्कर भट्ट	२५. राघवाभ्युदय	रामचन्द्र
८. आश्चर्यचूडामणि	शक्तिभद्र	२६. रामानन्द	अज्ञात
९. आनन्दराघव	राजचूडामणि दीक्षित	२७. जानकीराघव	अज्ञात
१०. हनुमन्नाटक	दामोदर मिश्र	२८. मारीवंचित	अज्ञात
११. हनुमन्नाटक	मधुसूदन (बंगाल)	२९. रामविक्रम	अज्ञात
१२. कुन्दमाला	दिङ्नाग	३०. राघवानन्द	अज्ञात
१३. रामाभ्युदय	यशोवर्मा	३१. अभिजात-जानकी	अज्ञात
१४. उदात्तराघव	मायुराज अनंगहर्ष	३२. अयोध्याभरत	अज्ञात
१५. अभिनवराघव	क्षीरस्वामी	३३. कैकेयीभरत	अज्ञात
१६. प्रसन्नराघव	जयदेव	३४. दशरथांक	अज्ञात
१७. मैथिलीकल्याण	हस्तिमल्ल	३५. प्रावृडंक	अज्ञात
१८. दूताङ्गद	सुभट्ट	३६. विभीषणनिर्भत्सांक	अज्ञात
१९. रामाभ्युदय	व्यासमिश्रदेव	३७. शक्त्यंक	अज्ञात
२०. अद्‌भुतदर्पण	महादेव	३८. सम्पात्यंक	अज्ञात
२१. जानकीपरिणय	रामभद्र दीक्षित	३९. उल्लाघराघव	सोमेश्वर
२२. बालरामायण	राजशेखर	४०. अंजनापवनञ्जय	हस्तिमल्ल

जिस ग्रन्थ में गद्य और पद्य दोनों को मिलाकर वर्णन किया गया हो, वह काव्य चम्पू कहलाता है।

१. राघवनैषधीय	हरदत्त सूरि	१६. जानकी गीता	हरि आचार्य
२. राघवपाण्डवयादवीय	चिदम्बर	१७. रामविलास	हरिनाथ
३. संकटनाशनस्तोत्र	गंगाधर	१८. संगीतरघुनन्दन	विश्वनाथसिंह
४. राघवविलास	विश्वनाथ	१९. सन्नीतिरामायण	राम कवि
५. रामशतक	सोमेश्वर	२०. राघवयादवीय	अज्ञात
६. चन्द्रदूत	कृष्णचन्द्र	२१. कपिदूत	अज्ञात
७. आर्यारामायण	कृष्णेन्द्र	२२. चन्द्रदूत	अज्ञात
८. रामकृष्णविलोमकाव्य	सूर्यदेव	२३. बालदूत	अज्ञात
९. यादवराघवीय	वेंकटाध्वारि	२४. हनुमद्‌दूत	अज्ञात
१०. रामलीलामृत	कृष्णमोहन	२५. रामगीतगोविन्द	अज्ञात
११. चित्रबन्धरामायण	वेंकटेश	२६. गीतराघव	हरिशंकर
१२. हंससन्देश	वेदान्तदेशिक	२७. गीतराघव	प्रभाकर
१३. भ्रमरदूत	रुद्रवाचस्पति	२८. राघवगीत (रामगीत)	श्रीकृष्ण भट्ट
१४. भ्रमरसन्देश	वासुदेव	२९. रामार्यशतक	मुद्‌गल भट्ट
१५. कोकिलसन्देश	वेंकटाचार्य	३०. रामाभ्युदय	रामभद्र

३१. राघवपाण्डवीयम् पिंगलिसूरनार्य

रामायण कथा और श्रीराम का आधार लेकर अनेक चम्पूकाव्यों की भी रचना की गई थी। राम विषयक संस्कृत भाषा के चम्पू काव्यों की सूची इस प्रकार है–

१.	चम्पूरामायण	राजा भोज	६.	मायापुष्पक	अज्ञात
२.	चम्पूरामायण	लक्ष्मण भट्ट	७.	स्वप्नदशानन	अज्ञात
३.	उत्तररामचरितचम्पू	वेंकटाध्वरिन्	८.	कविदूत	अज्ञात
४.	कृत्यारावण	अज्ञात	९.	अमोघराघवचम्पू	दिवाकर
५.	छलितरामायण	अज्ञात			

रामकथाओं के रूप में भी संस्कृत में अनेक ग्रन्थों की रचना हुई। जैसे–

१.	कथासरित्सागर	सोमदेव	४.	रामकल्पद्रुम	अनन्त भट्ट
२.	बृहत्कथामञ्जरी	क्षेमेन्द्र	५.	बृहत्कथा	गुणाढ्य
३.	रामकथा	वासुदेव	६.	वसुदेवहिण्डि (जैनग्रन्थ)	---

दशरथजातक, अनामकजातक और दशरथकथानम् इन बौद्धग्रन्थों में भी राम कथा का वर्णन मिलता है।

जैन ग्रन्थों में तथा जैन आचार्यों ने संस्कृत में भी रामायण, रामायण के पात्रों तथा रामकथा का वर्णन किया है। जैसे–

१.	पउमचरिय	विमलसूरि
२.	रामलक्खणचरियम्	शीलाचार्य
३.	कहावली में रामायण	भद्रेश्वर
४.	रामलक्खणचरियम्	भुवनतुंग सूरि
५.	सीयाचरियम्	भुवनतुंग सूरि
६.	जैन रामायण	हेमचन्द्र
७.	सीतारावण कथानक	हेमचन्द्र
८.	रामायण=रामदेवपुराण	जिनदास
९.	रामचरित	पद्मदेवविजयगणि
१०.	रामचरित	सोमसेन
११.	लघुत्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र	सोमप्रभ आचार्य
१२.	लघुत्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र	मेघविजयगणिवर
१३.	सीताचरित्र	ब्रह्मनेमिदत्त
१४.	सीताचरित्र	शांतिसूरि
१५.	सीताचरित्र	अमरदास
१६.	कथाकोष (रामायणकथानकम्)	हरिषेण
१७.	पुण्याश्रवकथाकोष	रामचन्द्र मुमुक्षु
१८.	धूर्त्ताख्यानम्	हरिभद्र

१९. धर्मपरीक्षा — अमितगति
२०. शत्रुञ्जय माहात्म्य — धनेश्वर

अपभ्रंश भाषा के ग्रन्थों में भी रामकथा मिलती है–

१. (रामायणपुराण) पउमचरिय — स्वयंभूदेव
२. पद्मपुराण (बलभद्रपुराण) — रइधू

संस्कृत साहित्य के धार्मिक ग्रन्थों में यत्र-तत्र रामायण, राम, सीता आदि का वर्णन मिलता है। जैसे–

१. हरिवंशपुराण (१.१५.२६, १.५४.२६, २.६०.३५, ३.७६.२४)
२. विष्णुपुराण (अध्याय ४, ५)
३. वायुपुराण (अध्याय ८८)
४. भागवतपुराण (स्कन्ध ९, अध्याय १०-११)
५. कूर्मपुराण (पूर्वविभाग, अध्याय १९, २१, ३४)
६. वाराहपुराण (अध्याय १२, ४५)
७. अग्निपुराण (अध्याय ५-११)
८. लिंगपुराण (पूर्वार्द्ध ६६)
९. वामनपुराण (अध्याय ३७)
१०. भविष्यपुराण (प्रतिसर्ग प्रथमखण्ड, अध्याय २)
११. नारदीयमहापुराण (अध्याय ७९)
१२. ब्रह्मपुराण (अध्याय २१३)
१३. गरुड़पुराण (अध्याय १४३)
१४. स्कन्दपुराण के केदार खंड, माहेश्वर खण्ड आदि दशखण्ड
१५. पद्मपुराण के पातालखण्ड, सृष्टिखण्ड, उत्तरखण्ड
१६. ब्रह्मवैवर्तपुराण (प्रकृतिखण्ड, अध्याय १४)
१७. श्रीमद्देवीभागवत (स्कन्ध १, अध्याय १६)
१८. विष्णुधर्मोत्तरपुराण (अध्याय २१२)
१९. नृसिंहपुराण (अध्याय ४७-५२)
२०. वह्निपुराण (पाण्डुलिपि पृष्ठ १८२, २६६)
२१. शिवमहापुराण की रुद्रसंहिता के सृष्टिखण्ड, सतीखण्ड, युद्धखण्ड।
२२. शतरुद्रसंहिता (अध्याय २०)
२३. उमासंहिता (अध्याय ३)
२४. शिवपुराण (धर्मसंहिता अध्याय १३, १४)
२५. शिवपुराण (ज्ञानसंहिता अध्याय ३०, ५७)
२६. महाभागवतपुराण (अध्याय ३७-४९)
२७. बहद्धर्मपुराण (पूर्वखण्ड, अध्याय १८ से २२, २५ से ३०)
२८. सौरपुराण (अध्याय ३०)
२९. कालिकापुराण (अध्याय ३८, ४८-५३, ६२)
३०. आदिपुराण (नन्ददृष्टस्वप्न अध्याय १६)
३१. कल्किपुराण (अंश ३, अध्याय ३, श्लोक २६-५८)
३२. बलभद्रपुराण
३३. योगवासिष्ठ रामायण
३४. अध्यात्मरामायण —श्री लक्ष्मण द्विज
३५. अध्यात्मरामायण
३६. अद्भुतरामायण —महन्त रघुनाथ
३७. आनन्दरामायण
३८. तत्त्वसंग्रहरामायण —राम ब्रह्मानन्द
३९. रामायण तत्त्वदर्पण —राम ब्रह्मानन्द
४०. कालनिर्णय रामायण
४१. अग्निवेशरामायण
४२. समयादर्शरामायण
४३. समयनिरूपणरामायण
४४. अब्दरामायण
४५. रामायणतात्पर्यदीपिका
४६. रामावतारकालनिर्णयसूचिका
४७. भुशुण्डीरामायण (मूलरामायण, आदिरामायण)
४८. ब्रह्मरामायण
४९. महारामायण
५०. चित्रकूटमाहात्म्य
५१. मन्त्ररामायण —नीलकण्ठ
५२. गायत्रीरामायण

५३. रामायणरहस्य —विद्यारण्य
५४. वेदान्तरामायण
५५. सत्योपाख्यान
५६. धर्मखण्ड (स्कन्दपुराणान्तर्गत)
५७. हनुमत्संहिता (महारासोत्सव)
५८. अद्भुतरामायण — रामेश्वरदत्त

श्री पण्डित धनराज शास्त्री (बस्ती, उत्तरप्रदेशवासी) के आधार पर श्री रामदास गौड़ ने अपने हिन्दुत्व नामक ग्रन्थ में अनेक रामायणों की चर्चा की है। जैसे—

१.	महारामायण	—शंकरपार्वती संवाद	(३५००० श्लोक)
२.	संवृतरामायण	—नारद	(२४००० श्लोक)
३.	लोमशरामायण	—लोमश ऋषि	(३२००० श्लोक)
४.	अगस्त्यरामायण	—अगस्त्य	(१६००० श्लोक)
५.	मंजुलरामायण	—सुतीक्ष्ण	(१२००० श्लोक)
६.	सौपद्मरामायण	—अत्रि ऋषि	(६२००० श्लोक)
७.	रामायणमहामाला	—शिवपार्वती संवाद	(५६००० श्लोक)
८.	सौहार्दरामायण	—शरभंग ऋषि	(४००० श्लोक)
९.	रामायणमणिरत्न	—वशिष्ठ-अरुन्धती संवाद	(३६००० श्लोक)
१०.	सौर्य्यरामायण	—हनुमान्-सूर्य संवाद	(६२००० श्लोक)
११.	चान्द्ररामायण	—हनुमान्-चन्द्रमा संवाद	(७५००० श्लोक)
१२.	मैन्दरामायण	—मैन्द-कौरव संवाद	(५२००० श्लोक)
१३.	स्वायंभुवरामायण	—ब्रह्मा-नारद संवाद	(१८००० श्लोक)
१४.	सुब्रह्मरामायण	—	(३२००० श्लोक)
१५.	सुवर्चसरामायण	—सुग्रीव-तारा संवाद	(१५००० श्लोक)
१६.	देवरामायण	—इन्द्र-जयन्त संवाद	(१,००,००० श्लोक)
१७.	श्रवणरामायण	—इन्द्र-जनक संवाद	(१,२५,००० श्लोक)
१८.	दुरन्तरामायण	—वशिष्ठ-जनक संवाद	(६१००० श्लोक)
१९.	रामायणचम्पू	—शिव-नारद संवाद	(१५००० श्लोक)

इन रचनाओं से अतिरिक्त भारत की अनेक भाषाओं में भी रामायण लिखी गई हैं। जैसे—
कन्नड़ भाषा में श्रीराम और रामायण के कथानक रचित हुए हैं—

१. पम्परामायण नागचन्द्र (अभिनव पम्प)
२. रामायण कुमुदेन्दु
३. रामविजयचरित देवप्प
४. रामकथावतार देवचन्द्र
५. जिनरामायण चन्द्रसागर
६. तोरवे रामायग नरहरि
७. जैमिनीभारत
८. (मैरावणचरित, सहस्रमुखरावणचरित्रम्)

तमिल भाषा के ग्रन्थ :—

१. तमिल रामायण —कम्बर कवि
२. निर्वचनोत्तररामायण —कवि तिक्कन्न
३. उत्तररामायण —कवि काचविभिदु
४. उत्तररामायण —कवि विट्ठलराजु

५. उत्तररामायण —कवि ककटि पापराजु
६. भास्कर रामायण —
७. सुग्रीवविजयमु —कंदुकूरि रुद्र
८. मोल्ल रामायण —मोल्लकुमारी कुम्हारिन
९. द्विपद रामायण —कट्ट वरदराजु
१०. रघुनाथ रामायण ---
११. गोपीनाथ रामायण ---
१२. एकोजी रामायण ---
१३. अच्च तेलुगु रामायण ---
१४. तेलुगु रामायण (द्विपदरामायण) —रंगनाथ कवि

मलयालम रामायण :–

१. इरामचरितम् —कवि राम
२. रामकथाप्पाट्टू —अय्यिपिल्लै आशन
३. कण्णशश रामायण —कण्णशश पणिक्कर
४. रामायण चम्पू —पुनम् नम्पूतिरि
५. अध्यात्म रामायण —एषुत्तच्छन कवि
६. केरल वर्मा रामायण —राजा वीर केरल वर्मा

जिन लोगों में साहित्य रचना का सामर्थ्य नहीं है, ऐसे अपठित लोगों में भी रामायण कथानक जनश्रुति के आधार पर जीवित है। जैसे उराँव, संथाल, मुण्डा, असुर, परधान, आगारिया आदि जाति के लोगों में दन्तकथा के रूप में रामायण कथानक प्रसिद्ध है। मध्यप्रदेश में एक नवीन रामायण की रचना हुई है, रामायण की इस कथा को **भिलोदी रामायण** कहते हैं।

अलग-अलग द्वीपों और प्रान्तों की रामायण भी प्रचलित रही है। जैसे—

१. सिंहली रामायण
२. असामिया की माधवकन्दली रामायण
३. काश्मीरी रामायण
४. मैथिली रामायण
५. पंजाबी रामायण
६. सिन्धी रामायण
७. जसवन्तसिंह की हरयाणवी रामायण
८. भानुभट्ट की नेपाली रामायण
९. कृत्तिवास ओझा की श्रीरामपांचाली
१०. बंगाली रामायण
११. उड़िया रामायण
१२. हरिहरविप्रकृत लवकुशर युद्ध
१३. दुर्गावर की गीतिरामायण
१४. अनन्तकदली की जीवस्तुति रामायण
१५. महीरावणवध
१६. पातालखण्ड रामायण
१७. सीतार पाताल प्रवेश नाटक
१८. रामलीला नाटक (विक्रम नरेन्द्र)
१९. उत्तरकाण्ड —शंकरदेव
२०. रामविजयनाटक (सीता स्वयंवर) —शंकरदेव
२१. बालकाण्ड —माधवदेव
२२. रामभावना नाटक —माधवदेव
२३. श्रीरामकीर्तन —अनन्त ठाकुर आता
२४. गणकचरित —धनञ्जय
२५. सीतावनवास —गंगारामदास
२६. श्री रामचन्द्र अश्वमेध —भवदेव विप्र
२७. महीरावण वध —श्रीचन्द्रभारती
२८. कथारामायण —महन्त रघुनाथ
२९. अद्भुत आश्चर्य रामायण —वडु नित्यानन्द आचार्य
३०. रामायण गाथा —चन्द्रावती
३१. अध्यात्म रामायण पांचाली —भवानीनाथ
३२. श्रीराम पांचाली —रामानन्द यति
३३. अद्भुत रामायण —जगत्राम राय
३४. रामभक्तिरसामृत —कमललोचन दत्त
३५. अंगदरायबार —फकीर राम कवि

भूषण
३६. अंगदरायबार —द्विजतुलसी
३७. अंगदरायबार —हाराधनदास
३८. विभीषणेर खोट्टा रायबार —रामनारायण(द्विजराम)
३९. कालनेमिर रायबार —काशीराम
४०. रामरसायन —रघुनन्दन गोस्वामी
४१. रामायण —जगतमोहनदास
४२. वाल्मीकिरामायण —राजशेखर वसु
४३. मेघनादवध —माइकेल मधुसूदन-दत्त
४४. विलंकारामायण —सिद्धेश्वर-दास
४५. जगमोहनरामायण= दाण्डिरामायण= बलरामदासरामायण —बलरामदास
४६. कान्तकेइलि —बलरामदास
४७. काकपोइ —बलरामदास
४८. सीतांकवारमासीभावना —बलरामदास
४९. वारमासी —बलरामदास
५०. ब्रह्माण्डभूगोल —बलरामदास
५१. हनुमन्तचउतीसा —बलरामदास
५२. कर्णदान —बलरामदास
५३. ठिकारामायण —नीलाम्बरदास
५४. रामविभा (विवाह) —अर्जुनदास,
५५. रघुनाथविलास —धनञ्जय
५६. बारमासी कोइलि —शंकरदास
५७. टीकारामायण —महेश्वरदास
५८. रामरसामृतसिन्धु —कान्हुदास
५९. अध्यात्मरामायण(उड़िया) —हलधरदास
६०. विलंकाखण्ड —वारानिधिदास
६१. विचित्ररामायण —विश्वनाथ खुँटिया
६२. विचित्ररामायण —भुइंया माधवदास
६३. रामलीलामृत —उपेन्द्रभंज
६४. वैदेहीशविलास —उपेन्द्रभंज
६५. अवनारसतरंग —उपेन्द्रभंज
६६. रामरसामृत —रामदास
६७. रामचन्द्रविहार —गोपीनाथ कविभूषण
६८. रामकृष्णकेलिकल्लोल —त्रिपुरारिदास
६९. रामलीलामृतकाव्य —व्रजबन्धु सामन्तराय
७०. रामलीला —ईश्वरदास
७१. अंगदपड़ि —लक्ष्मीधरदास
७२. रामचन्द्रविहार —मागुणी पट्टनायक
७३. पचीसा पोई —गोवर्धनदास
७४. नलरामचरित —शिशु ईश्वरदास
७५. अध्यात्मरामायण(अनुवाद) —तेलेंगा गोपाल
७६. अध्यात्मरामायण(अनुवाद) —नरहरि कविचन्द्र
७७. अध्यात्मरामायण(अनुवाद) —सूर्यमणिच्याउ पट्टनायक
७८. अध्यात्मरामायण(अनुवाद) —सारलादास
७९. सुचित्ररामायण(भोजचम्पूरामायण) (अनुवाद) —वनमालीदास
८०. रामायण —कृष्णचरण पट्टनायक
८१. सीतेशविलास —भुवनेश्वर कविचन्द्र
८२. नृत्यरामायण —केशव पट्टनायक
८३. पूर्णरामायण —केशव त्रिपाठी
८४. हलिआ रामायण (हलचलाते समय का गाना)
८५. रामलीला (नाटक) —पीताम्बर राजेन्द्र
८६. रामलीला (नाटक) —अनंग नरेन्द्र

<u>हिन्दी साहित्य में रामकथा सम्बन्धी ग्रन्थ—</u>

१. रामाज्ञाप्रश्न —गोस्वामी तुलसीदास
२. जानकीमंगल —गोस्वामी तुलसीदास
३. गीतावली —गोस्वामी तुलसीदास
४. रामचरितमानस —गोस्वामी तुलसीदास
५. कवितावली —गोस्वामी तुलसीदास
विनयपत्रिका —गोस्वामी तुलसीदास
६. भाषा वाल्मीकिरामायण —विष्णुदास
७. रामकथा (पद्य) —रामानन्द

८.	सूरसागर	—सूरदास	३७.	वैदेही वनवास	—अयोध्यासिंह उपाध्याय
९.	पृथ्वीराजरासो	—चन्दर वरदाई	३८.	साकेत सन्त	—बलदेवप्रसाद मिश्र
१०.	भरतमिलाप	—ईश्वरदास	३९.	कैकेयी	—केदारनाथ मिश्र
११.	रामजन्म	—ईश्वरदास	४०.	ऊर्म्मिला	—बालकृष्ण शर्मा नवीन
१२.	अंगदपैज	—ईश्वरदास	४१.	रामचन्द्रिका	—केशवदास
१३.	अष्टयाम	—अग्रदास	४२.	गोविन्दरामायण	—सिक्ख गुरु गोविन्दसिंह
१४.	पदावली	—अग्रदास	४३.	भावार्थरामायण	—एकनाथ
१५.	ध्यानमंजरी	—अग्रदास	४४.	सीतास्वयंवर	—जनी जनार्दन
१६.	अष्टयाम	—नाभादास	४५.	सीतास्वयंवर	—विठा रेणुकानन्दन
१७.	आदिरामायण	—मेहरबान सोढी	४६.	सीतास्वयंवर	—रामदास
१८.	हनुमन्नाटक	—हृदयराम	४७.	सीतास्वयंवर	—वेणाबाई
१९.	अवधविलास	—लालदास	४८.	सीतास्वयंवर	—वामन
२०.	सीतारामचौपाई	—समयसुन्दर	४९.	सीतास्वयंवर	—जयसाम स्वामी वडगांवकर
२१.	लक्ष्मणायन	----			
२२.	अवतारचरित	—नरहरिदास	५०.	सीतास्वयंवर	—आनन्दतनय
२३.	भाषा योगवासिष्ठ	—रामप्रसाद निरंजनी	५१.	सीतास्वयंवर	—गोसावीनन्दन
२४.	पद्मपुराण	—दौलतराम	५२.	सीतास्वयंवर	—नागेश
२५.	रामचरित	—सदल मिश्र	५३.	सीतास्वयंवर	—विट्ठल
२६.	रामरसायन	—रसिकबिहारी	५४.	युद्धकाण्ड	—कृष्णदास मुद्गल
२७.	विश्रामसागर	—रघुनाथदास	५५.	संक्षेपरामायण	—मुक्तेश्वर
२८.	रामस्वयंवर	—रघुराजसिंह	५६.	अहिमहिरावणवध	—मुक्तेश्वर
२९.	अवधविलास	—बाघेली कुंवरि	५७.	रामायण	—माधव स्वामी
३०.	कोशलकिशोर	—बलदेवप्रसाद मिश्र	५८.	लघुरामायण	—समर्थ रामदास
३१.	मैथिलीरामायण	—चन्दा झा	५९.	सुन्दरकाण्ड	—समर्थ रामदास
३२.	श्रीरामावतार	—शिवरत्न शुक्ल	६०.	युद्धकाण्ड	—समर्थ रामदास
३३.	राममड़ैया	—वंशीधर शुक्ल	६१.	रामायण	—वेणाबाई
३४.	श्रीरामचन्द्रोदय	—रामनाथ ज्योतिषी	६२.	रामविजय	—श्रीधर
३५.	रामचरित चिन्तामणि	—रामचरित उपाध्याय	६३.	रामायण	—मोरोपन्त (मराठी)
३६.	साकेत	—मैथिलीशरण गुप्त	६४.	शतमुख रावणवध	—अमृतराव ओक

गुजराती रामायण :–

१.	रामलीला ना पदो	—आशाएत	५.	रामलीला ना पदो	—भीम कवि
२.	रामविवाह	—भालण	६.	रामायण	—मांडण बंधाशे
३.	रामबालचरित	—भालण	७.	रावण मन्दोदरी संवाद	—लावण्यसमय
४.	सीताहरण	—मंत्री कर्मण	८.	सीताहनुमान्संवाद	—उद्धव कवि

९. लवकुशाख्यान	–नाकर	१३. रामायण	–उद्धव
१०. रणयज्ञ	–प्रेमानन्द	१४. रामायण	–विष्णुदास
११. सीतविरह	–हरिदास	१५. रामायण नो सार	–नर्मदा
१२. रामायण	–गिरधरदास		

उर्दू-फारसी रामायण–

१. रामायण खुश्तर	–मुंशी जगन्नाथ खुश्तर	७. रामायण मसीही	–मुल्ला मसीह
२. रामायणमंजूम	–मुंशी शंकरदयाल फर्हत	८. रामायण फैजी	
३. रामायणबहार	–बांकेबिहारीलाल बहार	९. तर्जुमा-इ-रामायण	–गोपाल
४. रामायणमेह्व	–सूरजनारायण मेह्व	१०. बाल्मीकिरामायण	–चन्द्रभान बेदिल
५. रामायण (फारसी)	–अल बदायूंनी	११. रामायण अमरप्रकाश	–लाला अमरसिंह
६. रामायण	–गिरिधरदास	१२. वाल्मीकिरामायण	–लाला अमानत राय

जिस प्रकार भारत के प्रत्येक प्रान्त नगर, ग्राम में रामायण और उसके पात्र श्रीराम आदि का लिखित साहित्य तथा मौखिक रूप से दन्तकथायें प्रचलित हैं, उसी प्रकार भारत से बाहर भी रामायण की लोकप्रियता के प्रमाण मिलते हैं। यथा–

१. तिब्बतीरामायण, २. पूर्वी तुर्किस्तान की खोतानीरामायण, ३. इण्डोनेसिया की ककबिन रामायण, ४. बाली द्वीप का वायांग वोंग नाटक, ५. जावा का सेरतराम, ६. सेरी राम, ७. राम के लिंग, ८. हिकायत सेरी राम, ९. पातानी रामकथा, १०. हिन्दचीन की रामकेर्ति, ११. खररामायण, १२. श्याम देश की रामकियेन (रामकीर्ति), १३. वर्मा के यू तो की राम यागन।

भारत से बाहर भी रामायण की कथा इतनी प्रसिद्ध और लोकप्रिय हुई कि विश्व के अनेक देशों में किसी न किसी रूप में यह पाई जाती है।

इस पृथ्वी के पूर्व भाग में भारत और पश्चिम भाग में यूनान देश का बड़ महत्त्व रहा है। जहां भारत ने वाल्मीकि, वेदव्यास, कपिल, कणाद और जैमिनि आदि तत्त्ववेत्ता ऋषि उत्पन्न किये, वहीं भारत से ज्ञान की शिक्षा प्राप्त करके यूनान ने भी होमर, सुकरात, अरिस्टोटल, प्लेटो और हैरोडोटस आदि कवि और विचारक पैदा किये हैं।

यूनान के आदि कवि होमर ने इलियड नामक प्रसिद्ध काव्य की रचना की थी। रामायण और इलियड के कथानक में अद्भुत साम्यता है। केवलपात्रों के नामों का ही अन्तर है शेष घटना, कथानक, वर्णनशैली आदि में कोई भेद नहीं है। इलियड में वर्णित कथा को यहां अति संक्षिप्त रूप में दर्शाया जा रहा है।

इलियड काव्य के मुख्य पात्र दो भाई हैं, उनमें परस्पर अत्यन्त प्रेम है, वे कभी एक दूसरे से पृथक् नहीं होते। इन दोनों को इनके पिता आर्गस ने राज्य से निकाल दिया था। हेलन नाम की एक रूपवती कन्या है, वह माता के पेट से पैदा नहीं हुई। हेलन के पिता ने हेलन के लिए स्वयंवर चुनने का कार्यक्रम बनाया उसमें मैनिलस ने सब प्रतिद्वन्द्वियों को हराकर हेलन को अपनालिया। राज्य से बहिष्कृत होने पर मैनिलस की अनुपस्थिति में पेरिस उसके घर आया और उसकी पत्नी हेलन को चुराकर समुद्र पार बसे ट्राय नगर में ले गया।

ट्राय नगर के महल समतल भूमि से बहुत ऊंचाई पर बने हुए थे। एक ऊंचे महल पर चढ़कर ट्राय के एक मुख्य व्यक्ति ने ट्राय सेना के सेनापतियों के नाम गिनाये थे। ट्राय के युद्ध में यूनानी सेना अनन्त थी। प्रोटे की सम्मति में उस सेना में एक लाख सैनिक, ११२६ जहाज, रथ और घुड़सवार थे। ट्रायसेना के सेनापति के बाण शत्रु पर मार करने के पश्चात् वापिस उसी के तरकस में लौट आते थे। अकिलस के भयानक गर्जन से ट्रायनगर की सेना कांप उठती थी। अपशकुन दिखाने के लिए जीयस खून की वर्षा करता था। जीयस का पुत्र मरने को था कि खून की वर्षा हुई। ट्राय का वीर जब पलास द्वारा मारा जाकर भूमिपर गिरा तो उसके नीचे सात एकड़ भूमि घिर गई। जोव ने सोना बरसाया। मैनिलस को उसकी पत्नी हेलन पुनः मिल जाती है। ट्राय के युद्ध में देवलोगों ने आकाश में बैठकर युद्ध देखा। एकिलस जब भूख से मरने को था तब इन्द्र ने मिनर्वा के द्वारा उसके पास अमृत भेजा। हैक्टर ने ट्राय नगर कां मुख्य फाटक जो लोहे से बना हुआ और पत्थर की दीवार में जड़ा हुआ था, उसे उखाड़ दिया। इस युद्ध में कई महारथी बड़ी-बड़ी शिलायें उठाकर शत्रुसेना पर फैंकते थे। ट्राय में सबसे अधिक बुद्धिमान् व्यक्ति एण्टीनर था जो पेरिस के दुष्कृत्य से सहमत नहीं था। ट्राय में जाकर मैनिलस और उसका छोटा भाई ओडेसस् दोनों अवश्य मारे जाते, यदि वहां एण्टीनर न होता। एण्टीनर ने पूरे यत्न से पेरिस को उपदेश दिया कि तुम हेलन को लौटा दो। हताश होकर एण्टीनर पेरिस का पक्ष छोड़कर मेनिलस से मिल गया। पेरिस के मारे जाने पर एण्टीनर ट्राय का राजा बना। ग्रीक सेना का प्रमुख सेनापति ऐसा व्यक्ति है जिसे ग्रीस के राजा ने विश्वकर्मा द्वारा बनाये गये शस्त्र दिये थे। इस सेनापति को इन्द्र ने अपना रथ, घोड़ा और सारथी भी दे दिया था।

इलियड के उपर्युक्त सार में दिये कथानक और पात्रों को रामायण में वर्णित घटनाओं से मिलाने पर दोनों की एकरूपता सिद्ध हो जाती है। जैसे–

आर्गस	= दशरथ	अकिलस	= हनुमान्
हेलन	= सीता	जीयस	= रावण
मैनिलस	= राम	मार्स	= कुम्भकर्ण
पेरिस	= रावण	जोव	= कुबेर
ट्राय	= लंका	एण्टीनर	= विभीषण
ओडेसस	= लक्ष्मण		

इन नामों का समीकरण करने से घटना को समझने में पर्याप्त सहायता मिल सकती है। इसी भांति प्राचीन रोम के नोनस की कृति डायोनीशिया और वाल्मीकिकृत रामायण में भी समानता है।

भारत में भी हरयाणा दिल्ली, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र में रामायण कथानक से जुड़ी हुई मृन्मूर्तियां एवं प्रस्तर प्रतिमाएं प्राप्त हो चुकी हैं। मुगल शासक अकबर ने अपनी एक विशेष प्रकार की स्वर्ण मुद्रा पर राम-सीता का चित्र अंकित करवाया था। भारतीय मन्दिरों के महन्तों और साधु समाज ने भी ऐसी धार्मिक मुद्राएं प्रचलित की थीं, जिन पर एक ओर त्रिशूल और धनुर्धारी राम लक्ष्मण अंकित हैं तथा दूसरी ओर राम-सीता राजछत्र के नीचे सिंहासन पर बैठे हुए हैं, साथ में लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न खड़े हैं, नीचे हाथ जोड़े हुए हनुमान् को बैठा दिखाया गया है। चांदी और पीतल से बनी इन मुद्राओं पर इस प्रकार का लेख मिलता है–

राम लछमन जानक जवल हनमनक ॥५१७४०॥

इन मुद्राओं को 'राम टंका' कहा जाता है। धार और रतलाम राज्य की मुद्राओं पर रामभक्त हनुमान्

का चित्र मिलता है। ग्वालियरराज्यान्तर्गत बजरंगगढ़ (जयनगर) के शासक जयसिंह (१७९७ से १८१८ ई०) ने स्वयं को राम और हनुमान् का भक्त मानकर रजत मुद्रा का प्रचलन किया और इस मुद्रा पर लिखवाया–

श्री राघवप्रताप पवनपुत्र बल पाय के

अर्थात् श्री राघव=राम के प्रताप से पवनपुत्र=हनुमान् से बल प्राप्त करके यह मुद्रा प्रचलित की गई। श्री रामचन्द्र और रामायण कथा के गुणों से प्रभावित होने के ये स्पष्ट प्रमाण हैं।

भारत के दक्षिण पूर्वीय भाग में बसे हुए इण्डोनेशिया और बाली आदि द्वीपों में रामायण की लोकप्रियता भारत से भी अधिक दिखाई देती है। वहां की राजधानी का नाम अयोध्या और राजा का नाम दसवां राम है। बाली द्वीप में रामायण कथा से सम्बन्धित लकड़ी से बनी सहस्रों मूर्तियां मिलती हैं, परन्तु आश्चर्य यह है कि भारतीयों की भांति वे मूर्ति की पूजा न करके उनसे घरों को सजाते हैं।

लंका की अशोकवाटिका में जाकर हनुमान् द्वारा सीता को राम की अंगूठी प्रदान करने के दृश्य से युक्त लकड़ी की एक मूर्ति बाली द्वीप से स्वामी ओमानन्द जी गुरुकुल झज्जर के संग्रहालयार्थ खरीद कर लाये थे। इससे बाली द्वीप में राम और रामायण की प्रसिद्धि तथा लोकप्रियता का अनुमान लगाया जा सकता है।

जिस प्रकार प्राचीन भारत में रामायण के दृश्योंवाले मन्दिर विद्यमान थे, उसी भांति जावा (यवद्वीप) के परमवनन (परमब्रह्म) नामक स्थान पर नवमशताब्दी ईसवी का एक विशाल शिवमन्दिर है। इस मन्दिर के चारों ओर दीवार पर रामायण की समस्त घटनाओं को प्रस्तर शिलाओं पर उत्कीर्ण किया हुआ है। सन् १९८४ में मैंने इस शिवमन्दिर की यात्रा की थी। उस समय दोनों देशों की सांस्कृतिक एकता देखने से रामायण के विस्तार और महत्त्व का ज्ञान हुआ था।

कम्बोडिया के अंगकोवाट मन्दिर की भित्तिकाओं पर रामायण के दृश्य अंकित हैं। भारत में होनेवाली रामलीला की भांति इंडोनेशिया के मुस्लिम कलाकार अत्यन्त प्रभावशाली ढंग से रामलीला का मंचन करते हैं।

से सब राम और रामायण की सत्ता और लोकप्रियता के प्रबल प्रमाण हैं।

उपर्युक्त विवरण से रामायण और उसके पात्र राम, सीता, हनुमान् आदि के प्रति विश्व के जनमानस में प्रतिष्ठित श्रद्धा का अनुमान लगाया जा सकता है। इतने विशाल साहित्य और पुरातत्त्व के प्रमाणों के रहते हुए भी भारत द्वेषी विदेशी इतिहासकार और उनके क्रीत मानसदास भारतीय पुरातत्त्वज्ञ भी यह कहते हुए लज्जा अनुभव नहीं करते कि रामायण और राम का कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं मिलता और ये केवल कोरी कल्पनायें हैं। सत्य यह है कि राम और रामायण को कवि कल्पना कहना अपनी अज्ञानता प्रकट करना है।

ऐसे व्यक्तियों को जान लेना चाहिये कि आठ प्रमाणों में शब्दप्रमाण की भी गणना होती है, जो आप्त महर्षि लोगों द्वारा वर्णित सिद्धान्त और ग्रन्थ होते हैं वे शब्दप्रमाण के अन्तर्गत होते हैं और कभी असत्य नहीं होते। इसलिए महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित मूलरामायण भी आर्षग्रन्थ है। इसमें विभिन्न सम्प्रदायवादी, पाखण्डी और मांसाहारी लोगों ने जो प्रक्षेप किये हैं, उनसे रहित रामायण सर्वथा उपादेय है।

प्रत्येक बात को आठ प्रमाणों के सहाय से तर्क की कसौटी पर परखनेवाले आधुनिक युग के निष्पक्ष समीक्षाकार महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने राम-रावण रामायण आदि की ऐतिहासिकता स्वीकार की है। वे अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के एकादश समुल्लास में लिखते हैं–

जब रघुगण राजा थे, तब रावण भी यहां के आधीन था। जब रामचन्द्र के समय में विरुद्ध हो गया,

तो उसको रामचन्द्र ने दण्ड देकर राज्य से नष्टकर उसके भाई विभीषण को राज्य दिया।

वे आगे प्रश्नोत्तर के रूप में लिखते है–

प्रश्न–रामेश्वर को राम ने स्थापित किया है। जो मूर्तिपूजा वेदविरुद्ध होती तो रामचन्द्र मूर्तिस्थापना क्यों करते और वाल्मीकिजी रामायण में क्यों लिखते?

उत्तर–रामचन्द्र के समय में उस लिंग वा मन्दिर का नाम निशान भी नहीं था, किन्तु यह ठीक है कि दक्षिण देशस्य 'राम' ने मन्दिर बनवा, लिंग का नाम 'रामेश्वर' धर दिया है। जब रामचन्द्र सीता जी को ले हनुमान् आदि के साथ लंका से चले, आकाशमार्ग में विमान पर बैठ अयोध्या को आते थे, तब सीता जी से कहा है कि–

अत्र पूर्वं महादेवः प्रसादमकरोद् विभुः॥२०॥
सेतुबन्ध इति विख्यातम् ॥२१॥
वाल्मीकिरामायण, युद्धकाण्ड, सर्ग २३

हे सीते! तेरे वियोग से हम व्याकुल होकर घूमते थे और इसी स्थान में चातुर्मास किया था और परमेश्वर की उपासना ध्यान भी करते थे। वही जो सर्वत्र विभुव्यापक महान् देवों का देव महादेव परमात्मा है, उसकी कृपा से हमको सब सामग्री यहां प्राप्त हुई और देख! यह सेतु हमने बांधकर लंका में आके, उस रावण को मार, तुझको ले आये। इसके सिवाय वहां वाल्मीकि ने अन्य कुछ भी नहीं लिखा।

सन् १८७५ में महाराष्ट्र के पूना नगर में इतिहास विषयक दसवां व्याख्यान देते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कहा था–

.........तदनन्तर रघु राजा हुआ, वह भी बड़ा महात्मा था। राम राजा से रघु राजा बड़ा था। रघु पीछे राजा राम हुए। इनका रावण से युद्ध हुआ। इनका इतिहास रामायण में वर्णन किया गया है। ऐसे-ऐसे वीर पराक्रमी, बुद्धिमान्, विद्वान् वैद्य और न्यायकारी राजा लोग आर्यावर्त में हुए हैं।

–उपदेश मञ्जरी, दशम व्याख्यान

इस आप्त कथन से भी राम, सीता, हनुमान्, वाल्मीकि, रावण, सेतुबन्ध और रामायण की सत्ता सिद्ध होती है।

--❋❋❋❋--

हनुमान् आदि मनुष्य थे अथवा बन्दर?

मनुष्य सभी प्राणियों में उत्तम बुद्धि और उत्तम शरीरवाला प्राणी है। मनुष्य की बुद्धि ज्ञान प्राप्ति के द्वारा विकसित की जा सकती है, परन्तु अन्य प्राणी प्रायः करके प्रकृति प्रदत्त स्वाभाविक ज्ञान तक ही सीमित रहते हैं।

रामायण में वर्णित वानर जाति के कर्मों को देखकर यह सिद्ध होता है कि बाली, सुग्रीव, जाम्बवन्त, हनुमान्, अंगद आदि मनुष्य थे, न कि बन्दर।

मनुष्य शरीरधारियों में विशिष्ट पुरुषों के कारण तथा नगर, पर्वत, नदी, स्थान, देश आदि में बसने के कारण अनेक जातियां बन जाती हैं। जैसे-देव, गन्धर्व, मनुष्य, यक्ष, किन्नर, असुर, राक्षस, पिशाच, वानर, नाग, गृध्र, ऋक्ष, उलूक, मत्स्य आदि।

व्यक्तिनाम से—सूर्यवंश, चन्द्रवंश, यादव, पौरव, कौरव, पाण्डव, काश्यप, भार्गव, पाराशर, भारद्वाज, गर्ग आदि।

देश के नाम से—यूनानी, पारसी, ईरानी, कन्नौजिये, बंगाली, पंजाबी, बिहारी, सिन्धी, कश्मीरी, गुजराती आदि।

नदी के नाम से—सिन्धी, सारस्वत ब्राह्मण, सरयूपारी ब्राह्मण। इसी भाँति पहाड़ी, वन, वनवासी, वनचारी, वानर, अरण्य, तीर्थ, गिरी, पुरी आदि भी स्थान विशेष और व्यक्ति विशेष के कारण जाति-उपजाति, श्रेणी, पन्थ, सम्प्रदाय आदि का रूप धारण कर लेते हैं। ऐस ही मनुष्यों के एक विशेष समुदाय को वानर नाम से अभिहित किया गया था। अब भी किसी चंचल और आवश्यकता से अधिक उछल कूद करनेवाले बालक को बन्दर कह देते हैं। ऐसे ही किसी व्यक्ति की सन्तति का नाम भी वानर पड़ जाना स्वाभाविक है। आज भी ग्रामीण परिवेश में यह परम्परा जीवित है, कभी किसी के पूर्वज ने कोई भला-बुरा काम कर दिया हो तो उसकी सन्तान को भी वही पदवी अनायास मिल जाती है। ग्राम भगड्याणा (महेन्द्रगढ़) की दो घटनायें मुझे स्मरण हैं-

अमरसिंह नामक एक व्यक्ति बहुत लम्बा था, जब वह उकडू बैठता था, तो उसके दोनों घुटने सिर के बराबर निकल जाते थे, वे तीन भाई थे। उसकी सास अन्धी थी। एक बार जब वह व्यक्ति अपनी ससुराल में उकडू बैठा था तो उसकी सास ने उसके एक घुटने, सिर और दूसरे घुटने पर हाथ टिकाकर कहा-बेटे! तीनों भाई बैठे हो। उसी दिन से आज तक उनका परिवार 'तीनों भाई' कहलाता है। इसी भाँति एक व्यक्ति आकृति से बहुत भूंडा (बदसूरत) था। उसकी अगली पीढ़ी सुन्दर होने पर भी आज तक 'भूंडिया' कहलाती है।

ऐसे ही किसी व्यक्ति की फुर्ती, चंचलता, चपलता आकृति, नेत्र आदि वानर (बन्दर) जैसी हो और वह व्यक्ति प्रतिष्ठित हो जाये तो उसके वंशज भी वानर कहलाने लग जायें तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं है।

रामायण में मनुष्यों की जिस शाखा विशेष को वानर कहा गया है, वे वानर लोग आर्य थे तथा वैदिक सभ्यता संस्कृति के उपासक थे। सन्ध्या, जप, तप और मृतक संस्कार वेदानुकूल करते थे। हनुमान् , ऋक्, यजुः, सामवेद, और व्याकरण शास्त्र का विद्वान् था। राम-लक्ष्मण के साथ बातचीत में इसने एक भी अपशब्द

का उच्चारण नहीं किया। इस बात को रामायण में इस प्रकार कहा है–

नानृग्वेदविनीतस्य नायजुर्वेदधारिणः ।
नासामवेदविदुषः शक्यमेवं विभाषितुम् ॥२८॥
नूनं व्याकरणं कृत्स्नमनेन बहुधा श्रुतम् ।
बहु व्याहरताऽनेन न किञ्चिदपशब्दितम् ॥२९॥

रामायण किष्किन्धा काण्ड सर्ग ३

हनुमान् ने सूत्र, वृत्ति, वार्तिक, भाष्य, संग्रह, छन्द आदि का विशेष अध्ययन किया था इसीलिये वह सर्वशास्त्रविशारद और विद्या में ब्रह्मा के समान माना जाता था।*

वानरों की राजधानी किष्किन्धा नगरी अति वैभवशाली और सुन्दर थी। सुग्रीव का राजभवन सात ड्योढियोंवाला था। उसमें सोने और चांदी के बहुमूल्य आसन और कालीन बिछे हुए थे। किष्किन्धा के प्रमुख राजमार्ग पर अंगद, मैन्द, द्विविद, गवय, गवाक्ष, शरभ, विद्युन्माली, सम्पाति, सूर्याक्ष, हुनमान्, वीरबाहु, सुबाहु, महात्मा नल, कुमुद, सुषेण, तार, जाम्बवान्, दधिवक्र, नील, सुपाटल और सुनेत्र आदि विशिष्ट अधिकारियों के सुन्दर और विशाल भवन पृथक्-पृथक् बने हुए थे। इनमें अनेक मन्त्री, राजदूत, सेनापति और गुप्तचर भी थे।

उपर्युक्त विशेषतायें क्या आज की बन्दर जाति में पाई जा सकती हैं? जैसे मनुष्यों में नाम रखने की परम्परा है, वैसी ही उस समय उन वानरों में भी थी। क्या आजकल भी बन्दरों में नामकरण की प्रथा प्रचलित है?

रामायण में वर्णित वानरों के सभी आचार-व्यवहार ऐसे थे, जैसे कि अन्य पड़ोस के राज्यों में व्यवहृत होते थे। जैसे– सोने के कलशों में जल रखना, ब्राह्मणों को भोजन कराने के बाद दक्षिणा देना, वेदमन्त्रों से यज्ञ करना, जूते पहनना, अग्नि की प्रदक्षिणा के पश्चात् हाथ मिलाकर मैत्री करना, यज्ञोपवीत (जनेऊ) धारण करना, अन्त्येष्टि संस्कार करना आदि।

रामायण में वानर शब्द के पर्यायवाची शब्द कपि, हरि, शाखामृग आदि मिलते हैं। संस्कृत साहित्य में यह शैली है कि छान्दोरचना में जहां मुख्य पद रखने से छन्दो-भंग होता हो, वहां उसके पर्यायवाची शब्द रख दिये जाते हैं; इससे यह अभिप्राय नहीं लिया जाना चाहिये कि शब्दकोष में जो शब्द बन्दर के पर्याय हैं, वे सब बन्दर के लिए ही होते हैं किन्तु तद्-गुण-विशिष्ट हेतु में भी उनका प्रयोग देखा जाता है।

रामायणयुगीन वानरों की उत्पत्ति भी मनुष्यों से ही हुई भी। जैसे इन्द्र से बाली, सूर्य से सुग्रीव, बृहस्पति से तार, कुबेर से गन्धमादन, अग्नि से नील, अश्विनी कुमारों से मैन्द और द्विविद, वरुण से सुषेण, पर्जन्य से शरभ, वायु से हनुमान् आदि। ये वीर और बुद्धिमान् वानर बन्दरियों के पेट से उत्पन्न नहीं हुये थे, अपितु सामान्य मनुष्यों की स्त्रियों जैसी माताओं से पैदा हुए थे। हनुमान् आदि वस्तुतः मनुष्य थे, न कि बन्दर। इस विषय में रामायण का एक महत्त्वपूर्ण प्रमाण देखिये–

न चैव मानुषं रूपं कार्यं हरिभिराहवे।
एषा भवतु नः संज्ञा युद्धेऽस्मिन् वानरे बले ॥३३॥

* रामायण उत्तरकाण्ड ३६.४६ ।

वानरा एव नश्चिह्नं स्वजनेऽस्मिन् भविष्यति ।
वयं तु मानुषेणैव सप्त योत्स्यामहे परान्॥३४॥
अहमेव सह भ्रात्रा लक्ष्मणेन महौजसा ।
आत्मना पञ्चमश्चायं सखा मम विभीषणः ॥३५॥

—वाल्मीकीय रामायण युद्धकाण्ड, सर्ग ३७

राम ने युद्ध से पूर्व सारी सेना को यह आदेश दिया था कि इस युद्ध में वानर लोग मानवी वेष=सामान्य मनुष्यों जैसा वेष धारण न करें। मैं, लक्ष्मण, विभीषण तथा इसके चार व्यक्ति केवल ये सात ही मानव वेष में युद्ध करेंगे, शेष सभी सेना वानरों का रूप धारण करके युद्ध करेगी। इससे सिद्ध है सभी वानर पुरुष शरीरधारी थे, केवल युद्ध के समय इन्होंने अपना वेश बदल कर वानरों का वेष धारण किया हुआ था। यदि वे वस्तुतः बन्दर ही थे तो उन्हें बानर का वेश धारण करके युद्ध करने की आज्ञा देना निरर्थक था और वे राम की बातें कैसे समझ सकते थे।

श्री रामानन्द सागर ने दूरदर्शन पर रामायण कथानक प्रदर्शित किया था। उन्होंने जहां बाली, सुग्रीव, हनुमान् आदि को बन्दर की आकृति में दिखाया, वहीं बाली और सुग्रीव की पत्नी तारा आदि को बन्दरी न दिखाकर मनुष्यों की स्त्रियों जैसा ही दिखाया। उन्हें विचारना चाहिये था कि जब वे बन्दर थे तो उनकी पत्नी बन्दरी क्यों नहीं दिखाई गई। बन्दरों को पूंछवाला दिखाते हैं, और उनकी पत्नियां बिना पूंछ की। कैसी विडम्बना है। इससे सिद्ध है कि वानर लोग बन्दर न होकर मनुष्यों की ही एक शाखा विशेष से सम्बद्ध थे। उन्हें बन्दर की आकृतिवाला मानकर और दिखाकर रामायण कथा को विकृत रूप में प्रस्तुत करना बुद्धिमत्ता का कार्य नहीं है।

इसी भाँति प्राचीन भारत की नाग, ऋक्ष, गृध्र, मत्स्य, उलूक आदि मनुष्य जाति को जानवरों की श्रेणी में खड़ाकरके भारत के इतिहास तथा संस्कृति, सभ्यता के साथ अन्याय और खिलवाड़ किया गया है। ऐसे प्रकरणों को शुद्ध करके पुनः सही रूप में प्रस्तुत करना चाहिये।

--****--

मृन्मूर्त्तियों के प्राप्ति स्थान

रामायणकथा के दृश्य रूप में उकेरकर जिन स्थानों के मन्दिरों में लगाकर उनकी शोभा बढ़ाई गई थी, उन स्थानों का संक्षिप्त परिचय यहां दिया जा रहा है–

१. नचारखेड़ा (दुर्जनपुर)– यह ग्राम हरयाणा के हिसार जिले में उचानामण्डी से लतानी रोड पर लगभग 20 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। दिल्ली से पश्चिम दिशा में लगभग १६५ किलोमीटर दूर है। इस ग्राम में स्थित प्राचीन खण्डहर से रामायण कथा से सम्बद्ध अभिलिखित मृन्मूर्तियां मिली हैं। यदि सारे खण्डहर की विधिपूर्वक खुदाईं हो तो रामायण कथानक से सम्बद्ध पूरा मन्दिर मिल सकता है। जहां अन्य खण्डहर क्षतिग्रस्त होते जा रहे हैं, वहां यह खण्डहर अभी तक दुर्दशा से बचा हुआ है क्योंकि यहां के लोगों में यह मान्यता है कि जो इस खण्डहर को खोदेगा उसे देवता उलटकर रख देगा।

पुरावस्तुओं को ढूंढते हुए सन् १९६८ ईसवी में आचार्य भगवान्देव जी जब इस ग्राम में गये तो ग्राम के शिव मन्दिर की सीढ़ियों में बड़ी-बड़ी ईंटें लगी देखीं। मन्दिर के पुजारी से एक ईंट मांग कर, आचार्य जी ने जब उसे पलट कर देखा तो वह त्रिशिरा राक्षस की मृन्मूर्ति मिली। उसे लेकर आचार्य जी गुरुकुल झज्जर में आ गये। आचार्य जी को दोशाम्बे (रूस) में भारतीय इतिहास परिषद् की गोष्ठी में जाना था, अतः योगानन्द शास्त्री और मुझे (विरजानन्द को) कह गये कि नचारखेड़ा जाकर मन्दिर के पुजारी के पैर छूकर नमस्कार कर देना और पांच रुपये भेंट चढ़ाकर उनसे जीने (सीढ़ी पैड़े) में लगी बड़ी-बड़ी सारी ईंटें मांग लेना, वे दे देंगे।

श्री आचार्य जी के रूस यात्रा पर चले जाने के बाद योगानन्द शास्त्री, मैं और रवीन्द्र शास्त्री (मैसूर वाले) जीप से वहां गये और पुजारी जी का दो रुपये से स्वागत-नमस्कार आदि करके मैंने कहा महन्त जी! आपके जीने (सीढ़ी) की ईंटें उखाड़ लें। उन्होंने आज्ञा दे दी तो हमने चार बड़ी ईंटें उखाड़ कर गाड़ी में रख लीं। मन्दिर के पास पड़े पुरानी ईंटों के ढेर में एक सुन्दर मयूराकृति बनी मृन्मूर्ति तथा एक अन्य टूटी मृन्मूर्ति पड़ी थी, वे भी उठा लीं।

इसके पश्चात् तुरन्त लौट चले। मार्ग में एक नहर के किनारे इनको धोकर देखा तो पंचवटी दृश्यवाली मृन्मूर्ति पर लेख देखकर अति हर्ष हुआ। इन मृन्मूर्तियों में १ पंचवटी गमन, १ मारीचमृग, २ त्रिशिरा वध, १ समुद्र उफान तथा एक मयूराकृति के दृश्य से अंकित थी। शिवमन्दिर में जाने से पूर्व नचारखेड़ा खण्डहर की चोटी पर घूमते हुए मुझे चद्दर ओढे हुए एक हाथ भी मिला था, जो किसी बड़ी मृन्मूर्ति का भाग रहा होगा (चित्र ४०)। कुछ वर्ष पश्चात् डॉ॰ योगानन्द जी शास्त्री ने इसी ग्राम से इन्द्रजित् की रथारूढ़ मृन्मूर्ति प्राप्त करके गुरुकुल झज्जर संग्रहालय को भेंट में दी थी। यह मृन्मूर्ति ग्राम के एक व्यक्ति के घर के द्वार पर लगी हुई थी, उसे किसी व्यक्ति ने यह कह दिया था कि यह मूर्ति द्वार पर लगी रहेगी तो घर में अनिष्ट हो जायेगा। इसलिए उसने मूर्ति के मुख आदि को खण्डित करके उस पर सीमेंट पोत दिया था, वह सीमेंट बड़ी कठिनता से छूटा। इसी दुर्जनपुर ग्राम के तालाब में गंगा की मृन्मूर्ति तथा एक प्रस्तर मूर्ति लगी हुई थी, दुबारा जाने पर वे वहां से लुप्त पाई गई। किसी ने उन्हें उखाड़कर इतस्ततः कर दिया।

२. सन्धाय (यमुनानगर)–यह ग्राम हरयाणा के प्रसिद्ध तीर्थ स्थल कुरुक्षेत्र से दक्षिण पूर्व दिशा में लगभग ८० किलोमीटर दूरी पर स्थित है। यमुनानगर से कपालमोचन तीर्थ की ओर से भी वहां पहुंचा

जा सकता है। इस स्थान से रामायण के कथानकों से सम्बद्ध अति सुन्दर मृन्मूर्तियां निकलती हैं। किन्तु हमारे संग्रहालय के लिए एक भी नहीं मिल पाई है क्योंकि धनिक और व्यापारी लोग वहां पहुंचकर अधिक मूल्य में पहले ही खरीद लेते हैं।

३. जींद—हरयाणा का जींद शहर प्रसिद्ध है। इस नगर में प्राचीन काल का एक बहुत विशाल और ऊंचा खण्डहर विद्यमान है। इसमें दो स्थानों से किसी व्यक्ति को दो मृन्मूर्तियां मिली थीं। एक पर बाली सुग्रीव को युद्ध करते हुओं को चित्रित किया था (चित्र १२)। दूसरी मूर्ति पर हनुमान् को अशोकवाटिका को नष्ट करता दिखाया गया है। (चित्र १९)

४. हाठ (जींद)—हरयाणा के जींद जिले में प्रसिद्ध कालवा ग्राम के पास हाठ ग्राम स्थित है। यह स्थान जींद और गोहाना से लगभग २५ किलोमीटर दूर है। इस स्थान से हनुमान् सदृश एक त्रुटित मृन्मूर्ति मिली है (चित्र ४२)। इस ग्राम में स्थित प्राचीन खण्डहर की खुदाई में प्रस्तर मूर्तियां भी मिली हैं। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के इतिहास विभाग ने यहां खुदाई कराई थी, उसमें मिट्‌टी की एक मोहर भी मिली थी। उस पर लिखा था—

नन्दनस वाटकिस ।

अथार्त् वाटकि के पुत्र नन्दन की मोहर। संस्कृत व्याकरणानुसार वटक का पुत्र वाटकि कहलाता है। इस रहस्य को न समझकर विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के एक प्रोफेसर श्री सीलकराम ने कहा कि इस मोहर पर वाटकिस शब्द गलत लिख दिया, यहां वाटिका लिखना चाहिये था, इससे यहां नन्दन वाटिका की संगति लग जाती है। संस्कृत ज्ञान से शून्य पुरातत्त्वज्ञ इसी प्रकार की निरर्थक कल्पनायें करके इतिहास को दूषित करते रहते हैं। किन्तु इनका यह मत अनुचित होने से अग्राह्य है।

५. सिरसा—हरयाणा का सिरसा जिला प्रसिद्ध है। दिल्ली से पश्चिम दिशा में रोहतक, हांसी, हिसार, फतेहाबाद होकर सिरसा पहुंच जा सकता है। यह दिल्ली से लगभग २७५ किलोमीटर दूर है। इसके खण्डहर से त्रिशिरावध के दृश्य से युक्त एक मृन्मूर्ति किसी को मिली थी, हम उसका चित्र ही प्राप्त कर सके हैं। (चित्र ६) उस पर ब्राह्मी लिपि में इस प्रकार लेख खुदा है—

त्रिशिरवधे (नमः) कृतिहन्ता रणस्य.......... ।

६. कटिंघरा (एटा)—उत्तरप्रदेश के एटा से मैनपुरी की ओर २५ किलोमीटर दूर गंगा जमनी के पास काली नदी के किनारे कटिंघरा नामक ग्राम स्थित है। इस ग्राम में तीन टीले इस भांति के हैं जैसे बड़े-बड़े मन्दिर दबे पड़े हों। उस ग्राम में रामायण कथा से अंकित मृन्मूर्तियों के अनेक फलक प्राप्त हुए थे। वे सभी मृन्मूर्तियां व्यापारियों के द्वारा कहीं विक्रय कर दी गईं।

गुरुकुल झज्जर संग्रहालय के संस्थापक स्वामी ओमानन्द जी ने कटिंघरा की अनेक मृन्मूर्तियां दिल्ली के एक व्यापारी से खरीदी थीं। सुग्रीव, जाम्बवन्त और हनुमान् के नामों से युक्त एक मृन्मूर्ति जामा मस्जिद (दिल्ली) के पास स्थित मुग़ल आर्ट पैलेस से दो सौ पच्चीस रुपये में ली थी। (चित्र १३)

७. अहिच्छत्रा—उत्तरप्रदेश के बरेली जिले की आंवला तहसील में रामनगर के पास प्राचीन नगर अहिच्छत्रा के खण्डहर दबे पड़े हैं। इस खण्डहर के चारों ओर गांवटिया, आनन्दपुर, रामनगर, कठौती, आंलमपुर और नसरतगंज नामक ग्राम बसे हुए हैं। इसे आदिकोट भी कहते हैं। जैनमतावलम्बियों का यह प्रसिद्ध तीर्थस्थल है। इस खण्डहर से कार्षापण, मौर्य, पाञ्चाल, कुषाण, गुप्त, गुर्जर प्रतिहार और मुस्लिम युग की मुद्राएं मिली हैं। मृन्मूर्तियां, प्रस्तरमूर्तियां, मोहरें इस स्थान से पर्याप्त मात्रा में प्राप्त हुई हैं। इसी

खण्डहर से रावण द्वारा सीताहरण के दृश्य से अंकित मृन्मूर्ति तथा रामायण से सम्बन्ध कुछ मृन्मूर्तियां प्राप्त हुई हैं। महाभारत की कथा से सम्बद्ध मृन्मूर्तियां भी यहां उत्खन्न में मिली थीं, जो अब राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में स्थित हैं। गंगा यमुना की प्रसिद्ध मृन्मूर्ति तथा भरत द्वारा जंगली पशुओं को बांधने के दृश्यवाली मृन्मूर्ति भी इसी अहिच्छत्रा की देन है।

८. कौशाम्बी–उत्तरप्रदेश के इलाहाबाद (प्रयाग) जिले में यमुनानदी के किनारे कोसम (कौशाम्बी) स्थित है। इस खण्डहर से कौशाम्बी की स्थानीय नन्दी प्रकार मुद्राएं, कार्षापण मुद्राएं, मघ मुद्राएं, ताम्रलेख, शिलालेख, मृन्मूर्तियां, प्रस्तरमूर्तियां, मणके तथा अन्य कलात्मक सामग्री प्राप्त हुई हैं। अशोक का स्तम्भ-लेख भी इस खण्डहर पर विद्यमान है।

रावण द्वारा सीताहरण का दृश्य तथा रावणमुख हमें इसी खण्डहर से प्राप्त हुआ है। रावण द्वारा सीताहरण की दो मृन्मूर्तियां इलाहाबाद के म्यूनिसिपल संग्रहालय में भी हैं। श्री सतीशचन्द्र काला ने इसे अपने ग्रन्थ में प्रकाशित किया है, परन्तु रावण द्वारा सीताहरण किये जाने के इस दृश्य की चर्चा वहां नहीं की गई है। (देखें टैराकोटा फिगर्स फ्रोम कौशाम्बी चित्र ३७, ३८)

९. भादरा (गंगानगर)–राजस्थान के गंगानगर जिले में नौहर के पास भादरा नामक उपनगर स्थित है। इसके पास स्थित प्राचीन खण्डहर से रामायण की कथा से सम्बद्ध मृन्मूर्ति मिली है। इस दृश्य में राम-लक्ष्मण के चित्र अंकित किये गये हैं, ऐसी सम्भावना है। (चित्र ४१)



मृन्मूर्तियों में रामायण कथा के दृश्य

गुरुकुल झज्जर के संग्रहालय में सुरक्षित तथा अन्यत्र प्राप्त रामायण के दृश्यों से युक्त मृन्मूर्तियों का विवरण इस प्रकार है–

	विषय	प्राप्ति स्थान	संख्या
१.	राम का पंचवटी गमन	नचारखेड़ा	१
२.	त्रिशिरा का खरदूषण से विचार विमर्श	नचारखेड़ा	१
३.	त्रिशिरावध	नचारखेड़ा	२
	त्रिशिरावध	कटिंघरा	१
४.	मारीच मृग	नचारखेड़ा	१
५.	सीताहरण	कटिंघरा	१
	सीतहरण	अहिच्छत्रा	१
	सीताहरण	कौशाम्बी	१
६.	रावणमुख	कौशाम्बी	१
७.	पम्पासर शोभा	नचारखेड़ा	१
८.	सुग्रीव आदि अपहृत सीता की ओर देखते हुए	कटिंघरा	१
	सुग्रीव आदि द्वारा राम का स्वागत	कटिंघरा	१
	सुग्रीव आदि द्वारा राम का स्वागत	अहिच्छत्रा	१
९.	राम द्वारा बालीवध	कटिंघरा	१
१०.	अशोकवाटिका का में सीता	कटिंघरा	१
११.	वानर सैनिक	कटिंघरा	७
१२.	समुद्र के मत्स्य	कटिंघरा	३
	समुद्र का कोप	नचारखेड़ा	१
	समुद्र का जीव	अहिच्छत्रा	१
१३.	इन्द्रजित् का युद्ध	नचारखेड़ा	१
१४.	हनुमान्	हाठ	१
१५.	रामलक्ष्मण ?	भादरा	१
१६.	योद्धा ढालसहित	कटिंघरा	१
१७.	गन्धर्व	कटिंघरा	

१८.	राम ?	अहिच्छत्रा	२
	राम ?	कटिंघरा	१
	मृन्मूर्ति का हाथ	नचारखेड़ा	१

गुरुकुल झज्जर संग्रहालय से अन्यत्र विद्यमान रामायण कथायुक्त दृश्य

१.	बाली सुग्रीव युद्ध	जींद	१
२.	अशोकवाटिका का हन्ता हनुमान्	जींद	१
३.	नागपाशबद्ध राम	संधाय	१
४.	मकराक्ष राक्षस	संधाय	१
५.	शूर्पणखा नासिकाछेदन	संधाय	१
६.	त्रिशिरावध	सिरसा	१

--****--

मृन्मूर्तियों के दृश्यों की रामायणकथा से तुलना

रामकथा सम्बन्धी जितनी मृन्मूर्तिया हमें प्राप्त हुई हैं तथा जितनी बाहर से ज्ञात हुई हैं उनके दृश्यों की तुलना रामायण की कथा के अनुसार क्रमशः यहां प्रस्तुत की जा रही है।

१. राम, सीता, लक्ष्मण का पञ्चवटी गमन–

जब श्रीरामचन्द्र जी सीता और लक्ष्मण के साथ पञ्चवटी की ओर प्रस्थान कर रहे थे, उस समय मार्ग मे जटायु से भेंट हुई थी। रामायण के अनुसार–

अथ पञ्चवटीं गच्छन्नन्तरा रघुनन्दनः ।
आससाद महाकायं गृध्रं भीमपराक्रमम् ॥
–वाल्मीकीय रामायण, अरण्यकाण्ड १४.१ ॥

पञ्चवटी की ओर जाते समय बीच में श्री राम को एक विशालकाय और अत्यधिक पराक्रमी गृध्र मिला।

इस श्लोक को दृश्य में अंकन करनेवाली एक त्रुटित मृन्मूर्ति नचारखेड़ा (दुर्जनपुर, हिसार) के शिव मन्दिर की सीढ़ियों में उल्टी करके लगा रक्खी थी। इसका आकार ३२×३३×७.५ सैंटीमीटर है। इस मूर्ति पर धनुष और बाणयुक्त तूणीर कन्धे पर लटकाये हुए वक्षस्थल पर कवच के स्थान पर वस्त्र बांधे लक्ष्मण को सीता के पीछे चलते हुए दिखाया गया है। जो भाग टूट गया है, उसमें श्री राम और गृध्रराज जटायु को चित्रित किया होगा। सीता के बालों में फूलों की माला है तथा कानों में बड़े-बड़े कुण्डल हैं, लक्ष्मण के सिर पर बालों का जूड़ा बना हुआ है। मृन्मूर्ति के कोणों और चारों ओर की पट्टिका पर कमलपुष्प बने हैं। सीता और लक्ष्मण की मुस्कराहट और भावाभिव्यक्ति को कलाकार ने अपने हस्तलाघव से जीवन्त कर दिया है। इस मृन्मूर्ति पर टूटने के पश्चात् जो अवशिष्ट लेख गुप्तपूर्व कालीन लिपि में लिखा है, वह इस प्रकार है–

........छन् अन्तरा रघुनन्दनः। आससाद महागृध्रैः

–अर्थात् पञ्चवटी जाते हुए बीच में श्रीराम महा-शरीरवाले गृध्रों के साथ बैठे। (चित्र संख्या १)

श्लोक का शेष भाग मृन्मूर्ति के निचले त्रुटित भाग में रहा होगा, ऐसा अनुमान है।

शूर्पणखा की नासिका का छेदन–

सन्धाय से मिली इस प्लेट का हम चित्र प्राप्त नहीं कर सके। वह भी कई टुकड़ों में टूटी हुई थी। परन्तु जोड़ कर रखने पर अंकन की विषय वस्तु से ज्ञात हुआ कि लक्ष्मण खड्ग से शूर्पणखा का नाक काटते दिखलाये गये थे। उसके दायें राम खड़े यह दृश्य देख रहे थे। राम-लक्ष्मण दोनों धनुष बाण लिये कन्धे पर तूणीर लटकाये हुये अंकित थे। दायें खड़े राम के बायें लक्ष्मण अपने बायें हाथ से शूर्पणखा के बालों को पकड़ कर ऊपर उठाते हुये दायें हाथ में पकड़ी तलवार से उसका नाक काटते दिखाये गये थे। इस कलाकृति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि कलाकार ने धरती से ऊपर उठाते हुए शूर्पणखा के शरीर का अंकन बेहद सटीक किया है। उसकी देह शिथिल होकर लटक गई और काँपती हुई दिखती है, उसके चेहरे पर

भय और आतंक स्पष्ट उभर गया है। उससे छटपटाहट और बेबसी फूट रही है। शूर्पणखा के सिर से थोड़ा ऊपर ब्राह्मी अक्षरों में उसका नाम लिखा है। यहां राम और लक्ष्मण के कुञ्चित केश लहरदार चुन्नटों में कन्धे तक लटकते दिखाकर उनके अरण्योचित परिवेश को आदर दिया है। बहुत वर्ष पहले यह कलाकृति देखी थी, अतः अब सब याद नहीं। परन्तु मन पर आज तक उसकी जो छाप है उसके अनुसार कहा जा सकता है कि इतनी सुन्दर कलाकृति और कोई देखने में नहीं आई। इस गांव के लोगों से बात करने पर पता चला कि समय-समय पर यहां से छोटी बड़ी बहुत-सी मृन्मूर्तियां निकलती रही हैं लेकिन किसी ने भी उनके रख रखाव पर ध्यान नहीं दिया, अपितु बेकार की वस्तु समझकर फैंक दिया। अन्यथा यहां से गुप्तकला का बहुत बड़ा कोष सञ्जोया जा सकता था।

(प्राचीन भारत में यौधेय गणराज्य, पृष्ठ १९८)

श्री राम और यति लक्ष्मण जैसे आदर्श पुरुषों ने शूर्पणखा का नाक काटा हो, यह उनकी मर्यादा के विपरीत लगता है। लोक में प्रसिद्ध है कि नाक काटने का अर्थ है अपमानित करना। यदि कोई व्यक्ति अनीति का आचरण कर देता है तो समाज अथवा उसके परिवारवाले यह कह देते हैं कि तूने हमारी नाक कटवा दी अर्थात् तेरे इस दुष्कर्म ने हमें अपमानित कर दिया।

शूर्पणखा ने जब राम-लक्ष्मण से विवाह की कामना प्रकट की तो उन्होंने निषेध कर दिया, इससे शूर्पणखा स्वयं को अपमानित हुआ अनुभव करने लगी और उसने अपने भाइयों से जाकर कह दिया कि लक्ष्मण ने मेरी नाक काट दी अर्थात् मेरा अनुरोध न मानकर मेरा अपमान कर दिया।

२. त्रिशिरा राक्षस द्वारा खर-दूषण से विचार विमर्श,-

जब शूर्पणखा के प्रणय निवेदन को श्रीराम एवं यति लक्ष्मण ने अस्वीकार कर दिया तो वह क्रुद्ध होकर सीता को अपने प्रणय में बाधक जान उसे मारने के लिए दौड़ी। शूर्पणखा ने विचारा कि जब तक सीता राम के पास है तब तक मुझे विवाह के लिए स्वीकृति नहीं मिल सकती। इसलिए सीता को बीच से हटाना आवश्यक है। शूर्पणखा के इस दुःसाहस को देखकर श्रीराम ने लक्ष्मण को आदेश दिया कि क्रूर और अनार्य स्वभाववाली इस शूर्पणखा से परिहास करना छोड़कर इसे कुरूपता प्रदान कर दो। इस आदेश के मिलते ही लक्ष्मण ने शूर्पणखा के नाक और कान काट कर उसे विकृत रूप दे दिया।

शूर्पणखा ने जब इस दुरवस्था में जाकर भाई खर को यह घटना सुनाई तो खर-दूषण और त्रिशिरा राक्षस ने विचार विमर्श करके चौदह बलवान् राक्षसों को राम से युद्ध करने के लिए भेजा।

इति तस्यां ब्रुवाणायां चतुर्दश महाबलान्।
व्यादिदेश खरः क्रुद्धो राक्षसानन्तकोपमान्॥

—वाल्मीकिरामायण, अरण्यकाण्ड १९.२१

शूर्पणखा के इस प्रकार कहने पर उसके भाई खर ने अतिक्रुद्ध होकर अत्यन्त बलवान् और यमराज के सदृश भयंकर चौदह राक्षसों को यह आदेश दिया कि दो शस्त्रधारी मनुष्य एक युवती स्त्री के साथ इस दण्डकारण्य में घुस आये हैं, तुम उन तीनों को मार डालो, जिससे मेरी बहन उनका रक्त पीकर अपना मनोरथ पूरा कर सके।

इस घटना को ४२×४४×९ सैंटीमीटर आकारवाली मृन्मूर्ति में चित्रित किया है (चित्र २)। इस मृन्मूर्ति में चार खम्भों के सहारे टिकी छत के नीचे बीच में त्रिशिरा राक्षस चौकी पर बैठा है बीच का मुख त्रुटित है तथा शिर के दायें भाग में 'त्रिशिरा' लिखा है। त्रिशिरा राक्षस के एक ओर खर तथा दूसरी ओर दूषण बैठे हैं। खर और दूषण के बायें हाथ में खड्ग है। खड्ग का मूठ भाग शेष है, बाकी टूट गई है। इस मृन्मूर्ति की नीचेवाली पट्टी पर दो चतुष्कोण और बराबर की दो पट्टियों पर तीन गोल कमल पुष्प बने हुए हैं। इस मृन्मूर्ति के पादभाग में गुप्तपूर्वकालीन लिपि में जो लेख लिखा है वह इस प्रकार पढ़ा गया है–

चतुर्दश राक्षसा सुजित्वा रामधेयश

इसका भाव है–चौदह राक्षसों को राम ने भली भांति जीतकर यश प्राप्त किया। इक्कीसवें सर्ग के आठवें श्लोक में शूर्पणखा खर को सम्बोधित करके कहती है–

प्रेषिताश्च त्वया शूरा राक्षसास्ते चतुर्दश।
निहन्तुं राघवं घोरं मत्प्रियार्थं सलक्ष्मणम्॥

मेरा प्रिय करने के उद्देश्य से लक्ष्मण सहित राम का वध करने के लिए जो चौदह शूरवीर राक्षस भेजे थे (उन सबको राम ने अपने मर्मभेदी बाणों से मार गिराया)

इसके पश्चात् २२वें सर्ग में दूषण के नेतृत्व में चौदह हजार राक्षसों को भेजने का तथा २४ और २६वें सर्ग में राम के साथ युद्ध करते हुए १४ हजार राक्षसों के मारे जाने का वर्णन है। १९, २०, २१वें सर्ग में सात वार चौदह राक्षसों की चर्चा है।[१] इससे आगे चौदह हजार राक्षसों के मारे जाने का पुनः विवरण दिया है।[२] चौदह हजार राक्षसों का मारना अतिशयोक्ति भी हो सकती है शत और सहस्र शब्द अधिक अर्थ में भी प्रयुक्त होते हैं। मृन्मूर्ति के अनुसार चौदह राक्षसों का मारा जाना उचित जान पड़ता है।

त्रिशिरा द्वारा युद्ध में गमन और उसका वध–

जब दूषण भी अपनी राक्षसी सेना सहित मारा गया तो खर श्रीराम के साथ युद्ध करने के लिए जाने को उद्यत हुआ। उसे रोककर त्रिशिरा राक्षस स्वयं युद्ध में गया। वाल्मीकिरामायण में लिखा है–

त्रिशिरास्तु रथेनैव वाजियुक्तेन भास्वता।
अभ्यद्रवद् रणे रामं त्रिशृङ्ग इव पर्वतः ॥७॥

–अरण्यकाण्ड, सर्ग २७

घोड़े जुते हुए चमकते हुए रथ के द्वारा त्रिशिरा ने युद्धभूमि में श्रीराम पर आक्रमण किया। उस समय त्रिशिरा राक्षस ऐसे प्रतीत हो रहा था जैसे तीन शिखरोंवाला पर्वत हो।

शिरांस्यपातयत् त्रीणि वेगवद्भिस्त्रिभिः शरैः।
सधूमं शोणितोद्गारी रामबाणाभिपीडितः॥१८॥

–अरण्यकाण्ड, सर्ग २७

–वाल्मीकि रामायण, अरण्यकाण्ड

१ १९.२१, २६; २०.११, १६, १७, १९; २१.८।

२ २९. २४; ३०.३१; ३२.१; ३३.१२; ३६.५, ८।

श्रीराम ने अत्यन्त वेगवाले तीन बाणों से त्रिशिरा के तीनों सिर काट गिराये। राम के बाणों से पीड़ित होकर वह राक्षस अपने धड़ से भाप सहित रुधिर उगलता हुआ प्रतीत हो रहा था।

इस शाब्दिक वर्णन को कला में ढालनेवाली दो मृन्मूर्तियां नचारखेड़ा से, एक कटिंघरा से तथा एक सिरसा से प्राप्त हुई थी।

३. नचारखेड़ा से प्राप्त ४२×३०×९ सैंटीमीटर आकर वाली इस मृन्मूर्ति में त्रिशिरा के रथ की आकृति हंस जैसी है और उस रथ में घोड़ों के स्थान पर सिर से कटिपर्यन्त मनुष्य शरीरवाले घोड़े जुते हुए हैं। इस मृन्मूर्ति पर भी गोल और चतुष्कोण कमल पुष्प बने हैं। (चित्र संख्या ३)

४. कटिंघरा (एटा) से प्राप्त मृन्मूर्ति में चार हाथोंवाले योद्धा को रथ पर बैठकर युद्धभूमि में जाता हुआ दिखाया है। इस का आकार ५०×३८×१६ सैंटीमीटर है। सम्भव है यह त्रिशिरा हो। (चित्र संख्या ४)

५. त्रिशिरा राक्षस से सम्बद्ध नचारखेड़ा से प्राप्त यह मृन्मूर्ति टूटने के पश्चात् ३३×३६×१० सैंटीमीटर के आकार की रह गई है। इसमें युद्धभूमि में जाते हुए त्रिशिरा पलाथी लगाकर रथ पर बैठा है। दायां और बीच का सिर टूट गये हैं। त्रिशिरा के छह हाथों में से नीचे के दायें बायें दो हाथों में घोड़ों की लगाम पकड़ी हुई है। दायीं ओर के बीचवाले हाथ में खड्ग (सीधी तलवार=खाण्डा) पकड़ी हुई है। रथ का पहिया, बांक और घोड़े का पृष्ठ भाग अति सुन्दर निर्मित हैं। (चित्र ५)। इसी प्रकार के रथ का अंकन अहिच्छत्रा बरेली से प्राप्त और राष्ट्री संग्रहालय दिल्ली में सुरक्षित महाभारत युद्ध के दृश्योंवाली अर्जुन और जयद्रथ की मृन्मूर्तियों में भी किया गया है।

६. त्रिशिरावध (सिरसा)–

सिरसा और उसके आस-पास के क्षेत्र से भी इस श्रेणी की मृन्मूर्तियां मिलती हैं। सिरसा के प्राप्त एक पटल पर एक राक्षस दायें हाथ में खड्ग लिये अंकित किया गया है। इस फलक के अधोभाग में रथ का पहिया टूटा पड़ा है। प्लेट के ऊपर दो घोड़े मृत अवस्था में गिरे पड़े अंकित हैं। राक्षस के घुटनों पर लम्बे बालोंवाला कोई पक्षी गिरा हुआ है जिसका चेहरा गायब है। उसके दायें हाथ के नीचे भी इसी तरह का कुछ गिरा हुआ है। राक्षस का चेहरा टूट कर अलग हो गया था। परन्तु उसको फिर से जोड़ दिया गया है। किन्तु जोड़ने का ढंग बहुत भद्दा है। उसके साथ नई मिट्टी जोड़कर चेहरे की वास्तविक सुन्दरता को कुरूप और अनगढ़ बना दिया है। इस पर अंकित दृश्य से लगता है कि राम पक्ष के योद्धाओं ने इस राक्षस पर प्रहार कर इसका रथ आदि सब नष्ट कर दिया और यहां वह विलाप कर रहा है। फलक की ऊपरी वेष्टनी पर जो लेख है वह इस प्रकार पढा गया है–

तृशिरवधे (नमः)? कृतिहन्ता....... रणस्य (चित्र ६)

(प्राचीन भारत में यौधेय गणराज्य पृष्ठ १९८-१९९, चित्रफलक ७४ चित्र ९९)

७. मारीच मृग–

त्रिशिरा के मारे जाने पर खर ने राम से युद्ध किया, परन्तु वह भी मारा गंया। खर का एक सहचारी अक्रम्पन नामक राक्षस जैसे-तैसे बचकर रावण के पास गया और खर की मृत्यु का समाचार देकर रावण को परामर्श दिया कि सीता का अपहरण कर लिया जाये। इस परामर्श को मानकर जब रावण सीता का

अपहरण करने आया तो तटाकापुत्र मारीच नामक राक्षस ने रावण को समझाकर वापिस लंका में जाने का परामर्श दिया और कहा कि सीताहरण कार्य अनैतिक है, इसे न करें, जिसने आपको यह परामर्श दिया है, वह आपका मित्र न होकर शत्रु है। मारीच की यह बात सुनकर रावण वापिस लंका में लौट गया।

वहां जाने पर शूर्पणखा ने अपनी दुरवस्था दिखाकर रावण को पुनः प्रोत्साहित किया कि वह सीता का अपहरण कर ले। इस पर रावण पुनः मारीच के पास आया और अपना पूर्वाभिप्राय प्रकट किया। मारीच ने फिर भी रावण को इस दुष्कर्म से रोकना चाहा, परन्तु राक्षसराज रावण ने मारीच को डरा धमका कर योजना सहित राम के आश्रम के पास भेज दिया। मारीच माया मृग का रूप धारण करने की कला में प्रवीण था। वह माया मृग का रूप धारण करके राम की पर्णकुटी के निकट घूमने लगा।

मारीच को सुन्दर मृग जान सीता को लोभ आया और राम को कहा कि इसे पकड़ कर ले आइये। लक्ष्मण ने राम को भी सावधान किया, परन्तु जब नाश का समय आता है, तब मति भ्रष्ट हो जाया करता है। किसी कवि ने संस्कृत श्लोकों में यही भाव बड़े सुन्दर ढंग से कहा है–

असम्भवं हेममृगस्य जन्म, तथापि रामो लुलुभे मृगाय ।
प्रायः समापन्नविपत्तिकाले धियोऽपि पुंसां मलिनीभवन्ति ॥

स्वर्णमृग का जन्म असम्भव है, पुनरपि राम सोने के मृग के लोभ में आ गया। यह सत्य है कि जब आपत्तिकाल आता है तो मनुष्यों की बुद्धि मलिन हो जाती है और वे कर्त्तव्याकर्त्तव्य को भूल जाते हैं।

न भूतपूर्वो न कदापि दृष्टो न श्रूयते हेममयः कुरंगः।
तथापि तृष्णा रघुनन्दनस्य विनाशकाले विपरीतबुद्धिः ॥

सोने का जीवित मृग होता हो ऐसा न कभी पहले हुआ, न किसी ने देखा और न सुना। पुनरपि राम की तृष्णा स्वर्ग मृग के लिए होगई। जब विनाश का समय आता है तब बुद्धि विपरीत हो जाया करती है। लक्ष्मण के निषेध करने पर भी सीता ने कहा–

आर्यपुत्राभिरामोऽसौ मृगो हरति मे मनः ।
आनयैनं महाबाहो क्रीडार्थं नो भविष्यति ॥१०॥

–वाल्मीकीयरामायण, अरण्यकाण्ड सर्ग ४३

हे आर्यपुत्र राम! यह मृग अति सुन्दर है। इसने मेरे मन को हर लिया है। हे महाबाहो राम! इस मृग को पकड़कर ले आइये। यह हमारे मनोरञ्जन का साधन रहेगा।

इसी वर्णन को ४३×४४×८ सैंटीमीटर आकारवाली मृन्मूर्ति में कलात्मक रूप से दर्शाया गया है। मृन्मूर्ति का वर्णन इस प्रकार है–

लक्ष्मण और राम बायें हाथ में धनुष लिए हुए सीता के साथ बैठे हैं। लक्ष्मण का शिरोभाग खण्डित हो गया है। राम के बालों की जटा सिर के पृष्ठभाग की ओर लटकी हुई है। सीता के कान में कुण्डल हैं तथा सिर के केशों को फूलों से सजाया हुआ है। सामने मारीच मृग को भागते हुए प्रदर्शित किया है। मृन्मूर्ति के चारों कोनों पर चार चतुष्कोण पुष्पों में से एक पुष्प खण्डित है। ऊर्ध्वभाग, अधोभाग और सीता के हाथ के पास गोल आकृति में एक-एक कमलपुष्प बना हुआ है। (लक्ष्मण) राम और सीता की दृष्टि भागते हुए

मृग की ओर लगी हुई है। (चित्र ७)

८. सीताहरण–

सीता द्वारा मृग को पकड़कर लाने के आग्रह को मानकर जब राम ने मृग का पीछा किया और दूर जाकर उसे मार गिराया तो मायावी मृग वेषधारी मारीच ने प्राण छोड़ते समय हा सीते! हा लक्ष्मण! कहकर बहुत जोर से आवाज लगाई। इस आवाज को सुनकर सीता ने लक्ष्मण को कहा कि जाकर श्री राम का पता लगाइये, सम्भव है वे किसी आपत्ति में फंस गये हैं। परन्तु लक्ष्मण को विश्वास था कि यहां भी मारीच अपना मायाजा़ल फैला रहा है, इसलिये सीता को आश्वस्त करना चाहा, परन्तु सीता ने अत्यन्त कटुवचन कहकर लक्ष्मण को राम की खोज में जाने पर विवश कर दिया। जब लक्ष्मण आश्रम से दूर हो गया तो योजनाबद्ध उपाय के अनुसार से पहले से छिपे हुए परिव्राजक (साधु) वेशधारी रावण ने सीता का अपहरण कर लिया।

ततस्तां परुषैर्वाक्यैरभितर्ज्य महास्वनः ।
अंकेनादाय वैदेहीं रथमारोपयत्तदा ॥२०॥

–वाल्मीकीयरामायण, अरण्यकाण्ड सर्ग ४९

जोर से गर्जना करनेवाले रावण ने कठोर वचनों द्वारा विदेहपुत्री सीता को डांटा और गोद में उठाकर रथ में डाल दिया। रामायणकाल में विमान के लिए भी रथ शब्द प्रयुक्त होता था।

उत्तरीयं वरारोहा शुभान्याभरणानि च ॥२॥
वस्त्रमुत्सृज्य तन्मध्ये निक्षिप्तं सहभूषणम् ॥३॥

–वाल्मीकीरामायण, अरण्यकाण्ड सर्ग ५४

सीता ने अपने शिर का वस्त्र और आभूषण अपनी सुनहरे रंग की रेशमी चादर में बांधकर नीचे फैंक दिये। उपर्युक्त वर्णन को कुशल शिल्पी ने मृन्मूर्ति में इस प्रकार दर्शाया है–

अहिच्छत्रा से मिली ९×८×३ सैंटीमीटर की इस मृन्मूर्ति में रावण ने सीता को गोद में उठा रक्खा है और सीता विलाप करती हुई अपने आभूषण नीचे डाल रही है। इस मृन्मूर्ति से रावण का सिरवाला भाग टूट गया है। (चित्र ८)

९. यही दृश्य कौशाम्बी से प्राप्त १६×८×३.५ सैंटीमीटर आकार की कुषाणकालीन मृन्मूर्ति में भी है।

(चित्र ९)

११. कटिंघरा (एटा) से प्राप्त २०×१८×१० सैंटीमीटर आकार की इस त्रुटित मृन्मूर्ति में रथ अथवा विमान की पट्टिका पर पड़ी दुःखी सीता को अधोमुख किये रोती अवस्था में दिखाया गया है। (चित्र फलक ९, चित्र ११)। चित्र १० में रावण का मुख है। मुख का यह चित्र चित्रसंख्या ९ के सदृश किसी अन्य मृन्मूर्ति का टूटा हुआ है। इस मुखाकृति का आकार ६×५×२ सैंटीमीटर है।

१२. पर्वतशिखरस्थ पांच वानर :–

जब रावण सीता को उठाकर आकाशमार्ग से लंका की ओर जा रहा था तो विलाप करती हुई सीता की आवाज को सुनकर पर्वत पर बैठे पांच श्रेष्ठ वानरों ने ऊपर आकाश की ओर दृष्टि घुमाई। उन्हें ऊपर

देखते हुए जानकर सीता ने अपने कुछ वस्त्र और आभूषण नीचे फैंक दिये।

ह्रियमाणा तु वैदेही कञ्चिन्नाथमपश्यती ।
ददर्श गिरिशृंगस्थान् पञ्च वानरपुंगवान् ॥१॥
—वाल्मीकीयरामायण, अरण्यकाण्ड, सर्ग ५४

रावण के द्वारा अपहृत हुई विदेहपुत्री सीता को उस समय अपना कोई सहायक नहीं दिखाई देता था। तभी मार्ग में एक पर्वत की चोटी पर पांच श्रेष्ठ वानरों को बैठे देखा।

कटिंघरा से प्राप्त इस त्रुटित मृन्मूर्ति में पर्वत पर बैठे तीन वानर ऊपर आकाश की ओर देख रहे हैं। मृन्मूर्ति के अधोभाग की पट्टिका पर तीन वानरों के नाम दिखाई दे रहे हैं। १. ...., २. ....ली, ३. सुग्रीव, ४. जाम्बवन्त, ५. हनुमान् ॥

यद्यपि वाल्मीकि रामायण के उपर्युक्त श्लोक में पांच वानरों के नाम नहीं हैं, परन्तु मृन्मूर्ति ने इस समस्या का भी कुछ समाधान कर दिया है। त्रुटित मृन्मूर्ति पर प्रारम्भ के दो वानर तथा दो नाम लुप्त हैं। इस मृन्मूर्ति का आकार ४४×३८×६ सैंटीमीटर है। (चित्र फलक १०, चित्र १२)

१३. पम्पा सरोवर की शोभा :–

मायावी मारीच का वध करने के उपरान्त राम-लक्ष्मण जब अपनी कुटी पर लौटे तो वहां सीता और जटायु को न पाकर अति चिन्तित और शोकमग्न हो गये। वहां से सीता की खोज करते हुए वे पम्पा नामक सरोवर पर पहुंचे। वहां की शोभा और अपने साथ सीता का अभाव देखकर राम का मन व्याकुल हो गया। मोर आदि पक्षियों के नृत्य को देखकर राम का मन सीता को स्मरण करके खिन्न हो गया तो राम ने लक्ष्मण को कहा–

अमी मयूराः शोभन्ते प्रनृत्यन्तस्ततस्ततः ॥३६॥
पश्य लक्ष्मण नृत्यन्तं मयूरमुपनृत्यति ॥३८॥

ये मोर इधर-उधर नाचते हुए कैसे शोभायमान हो रहे हैं। लक्ष्मण! नाचते हुए मोर के साथ-साथ यह मोरनी भी नाच रही है। (ये मोर इसलिये प्रसन्न हैं क्योंकि इस वन में मोरनी का किसी राक्षस ने अपहरण नहीं किया है।) पम्पासर पर स्थित प्रसन्नचित्त मोर का अंकन २८×२४×१० सैंटीमीटर आकारवाली नचारखेड़ा से प्राप्त इस मृन्मूर्ति में दर्शाया है। (चित्रफलक ९, चित्र १३)

१४. सुग्रीव द्वारा राम का स्वागत–

पम्पासर की शोभा को देखने के उपरान्त राम और लक्ष्मण सीता को ढूंढते हुए ऋष्यमूक पर्वत पर पधारे। वहां वानरयूथपति सुग्रीव अपने भाई बाली द्वारा डराया हुआ अपने सहयोगियों सहित छिपा बैठा था। शस्त्रों से सज्जित राम-लक्ष्मण को अपनी ओर आते देखकर सुग्रीव को आशंका हुई कि कहीं ये दोनों छद्मवेशधारी व्यक्ति बाली ने मुझे मारने के लिए भेज दिये हों। इस पर बुद्धिमान् हनुमान् ने सुग्रीव को समझाकर कहा कि मैं इनसे मिलकर वास्तविकता का पता लगा कर आता हूं। जब हनुमान् राम से मिला तो राम और लक्ष्मण ने हनुमान् को अपने इधर आने का कारण बताया तथा हनुमान् ने भी सुग्रीव-बाली का वृत्तान्त सुनाकर दोनों की मैत्री से दोनों को लाभ होगा, यह परामर्श दिया। जब हनुमान् ने राम-लक्ष्मण से

परिचय पा लिया तो उनको लेकर सुग्रीव के पास आ गया। जब सुग्रीव ने दशरथपुत्रों का परिचय पा लिया तो अपने प्रतिष्ठित वानरों सहित उठकर और हाथ जोड़कर श्रीराम का स्वागत किया। इस दृश्य को कटिंघरा से प्राप्त मृन्मूर्ति पर दर्शाया गया है। इस मृन्मूर्ति का आकार ३०×३०×१२ सैंटीमीटर है। (चित्र १४)

१५. इसी प्रकार वानरपति द्वारा श्रीराम का स्वागत करने का दृश्य अहिच्छत्रा से प्राप्त त्रुटित मृन्मूर्ति पर भी प्रदर्शित है (चित्र १५)। इसका आकार १४×१३×५ सैंटीमीटर है।

१६. बाली-सुग्रीव युद्ध–

सुग्रीव से राम ने सारी कहानी सुनकर बाली को दण्ड देने का वचन दिया। इससे आश्वस्त होकर सुग्रीव ने बाली को युद्ध के लिए ललकारा।

मुष्टिभिर्जानुभिः पद्भिर्बाहुभिश्च पुनः पुनः ।
तयोर्युद्धमभूद् घोरं वृत्रवासवयोरिव ॥२९॥

–वाल्मीकीय रामायण, किष्किन्धाकाण्ड, सर्ग १६

मुक्कों, घुटनों, लातों और हाथों की मार से बाली–सुग्रीव में इन्द्र और वृत्रासुर की भांति घोर संग्राम होने लगा।

प्रस्तुत मृन्मूर्ति जींद के प्राचीन खण्डहर से श्री गुलशन भारद्वाज को मिली थी, हमने उनसे इसका चित्र लेकर प्रकाशित किया है। इस मृन्मूर्ति में बाली और सुग्रीव को मुक्कों और लातों से लड़ते हुए दिखाया है। दोनों भाई सिर पर पृथक्-पृथक् अलंकरणों से युक्त शिरस्त्राण धारण किये हुए हैं। दोनों ने मल्लयुद्ध के योद्धाओं की भांति कमरबन्ध और लंगोट बांध रक्खे हैं। एक ने अपने दायें पैर से दूसरे के बायें पैर को दबा रक्खा है तथा मुट्ठी बांधकर सिर पर प्रहार कर रहा है। दूसरा अपना बचाव करते हुए अपने दोनों हाथों से पत्थर उठाकर मारने की मुद्रा में हैं। (चित्र १६)

१७. श्रीराम द्वारा वाली वध :–

इससे पहले भी दोनों भाइयों का युद्ध हुआ था। दोनों भाइयों की आकृति, शरीर सौष्ठव और विशालता एक जैसी थी, इसीलिये दोनों में भेद नहीं कर सकने के कारण उनके युद्ध में राम सुग्रीव के सहायक नहीं हो सके। इस वार सुग्रीव के गले में माला पहनाकर पुनः युद्ध करवाया गया तो राम ने बिना मालावाले को 'यही बाली है' ऐसा पहचान कर बाण से घायल करके गिरा दिया।

मुक्तस्तु वज्रनिर्घोषः प्रदीप्ताशनिसन्निभः ।
राघवेण महाबाणो वालिवक्षसि पातितः ॥३६॥
वेगेनाभिहतो वाली निपपात महीतले ॥३७॥

–वाल्मीकीयरामायण किष्किन्धाकाण्ड, सर्ग १६

राम ने वज्र की भांति गड़गड़ाहट और बिजली की तरह तीव्र प्रकाश करनेवले बाण के द्वारा बाली की छाती में प्रहार किया। उस बाण की तीव्र चोट से बाली पृथ्वी पर गिर पडा।

कटिंघरा (एटा) से प्राप्त ५१×४०×१० सैंटीमीटर आकार की इस त्रुटित मृन्मूर्ति में राम को पेड़ की आड़ लेकर बाली पर बाण चलाते हुए दिखाया है। बाली की पूंछ और हाथ ऊपर की ओर उठे हुए हैं

वल्कलधारी राम के हाथ के पास ब्राह्मी लिपि में 'राम' यह नाम खुदा है। (चित्र १७)

१८. अशोक वाटिका मे सीता :-

राम ने जब बाली का वध कर दिया तो उसके पुत्र अंगद और भाई सुग्रीव का राज्याभिषेक करके राम ने इच्छा व्यक्त की कि अब सुग्रीव अपने गुप्तचर वानरों द्वारा सीता की खोज आरम्भ करवाये। उस समय तो सुग्रीव ने वर्षाकाल व्यतीत होजाने पर कार्यारम्भ की स्वीकृति दे दी। परन्तु तत्पश्चात् भी भोगविलास में संलग्न होकर अपनी प्रतिज्ञा को भूल गया। इससे राम और लक्ष्मण खिन्न हो गये और लक्ष्मण ने सुग्रीव के राजभवन में जाकर उसे कटुवचन कहे तो सुग्रीव ने हनुमान् आदि को बुलाकर सीता अन्वेषण का उद्योग प्रारम्भ कराया। इसी अभियान में हनुमान् ने समुद्र लांघकर लंका में जाकर सीता का पता लगाया। वहां सीता को अत्यन्त कष्ट अवस्था में पाया।

भूमौ सुतनुमासीनां नियतामिव तापसीम् ।
निश्वासबहुलां भीरुं भुजगेन्द्रवधूमिव ।।३१।।

—वाल्मीकीयरामायण, सुन्दरकाण्ड, सर्ग १५

सुन्दर शरीरवाली सीता नियमपरायणा तपस्विनी की भांति भूमि पर बैठी थी। वह डरती हुई बार-बार लम्बे श्वास लेती थी तथा कभी ऐसी लगती थी जैसे क्रुद्धनागिन बदला लेने के लिए भंयकर रूप धारण कर लेती हो।

कटिंघरा से प्राप्त ३४×१५×११ सैंटीमीटर आकार की इस मृन्मूर्ति में सीता को इसी दयनीय स्थिति में बैठी हुई प्रदर्शित किया गया है (चित्र १८)

चित्र २०, २७×४७×८ सैंटीमीटर

चित्र २१, ३७×२५×१३ सैंटीमीटर)

चित्र २२ = २४×१५×१२ सैंटीमीटर

चित्र २३ = २०×१५×१२ सैंटीमीटर

चित्र २४ = १९×१३×७ सैंटीमीटर

चित्र २५ = ३५×३५×१० सैंटीमीटर

चित्र ३८ = २०×१७×१० सैंटीमीटर (चित्रफलक २३)

१९. हनुमान् द्वारा अशोकवाटिका का विध्वंस-

सीता की ऐसी दुर्दशा देखकर और सीता से मिलने के पश्चात् चुपचाप वापिस लौटना हनुमान् को उचित प्रतीत नहीं हुआ। उसने रावण को अपनी उपस्थिति बतानी आवश्यक समझकर अशोकवाटिका के अन्तर्गत प्रमदावन को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया।

ततो मारुतवत् क्रुद्धो मारुतिर्भीमविक्रमः ।
उरुवेगेन महता द्रुमान् क्षेप्तुमथारभत् ।।१४।।
ततस्तद् हनुमान् वीरो बभञ्ज प्रमदावनम् ।
मत्तद्विजसमाघुष्टं नानाद्रुमलतायुतम् ।।१५।।

—वाल्मीकीयरामायण, सुन्दरकाण्ड, सर्ग ४१

(मेरे द्वारा उत्पात मचाने पर राक्षस सेना आयेगी, तो उसकी पूरी जानकारी प्राप्त कर लूंगा) यह सोचकर भयानक पुरुषार्थ करनेवाले पवनपुत्र हनुमान् क्रोधित होकर तूफान की भांति अतिवेग से वृक्षों को उखाड़कर फैंकने लगे। तदनन्तर वीर हनुमान् ने मस्त पक्षियों की आवाज से गूंजित तथा अनेक प्रकार के

वृक्ष और लताओं से भरे उस प्रमदावन (अशोक वाटिका) को उजाड़ दिया।

जिस मृन्मूर्ति पर यह उक्त दृश्य अंकित है वह जींद से मिली थी। इसका चित्र जींद निवासी श्री गुलशन भारद्वाज से लेकर यहां प्रकाशित किया है। इस मृन्मूर्ति में हनुमान् को अशोक वाटिका उजाड़ते हुए दिखाया है। मृन्मूर्ति के पादभाग पर पूर्वगुप्तकालीन लिपि में **"हनुमान् अशोकवाटिका हन्ता"** लिखा है। अर्थात् अशोकवाटिका को नष्ट करनेवाला हनुमान्। (चित्रफलक १५, चित्र १९)।

चित्र २६	२७x२४x८ सैंटीमीटर (नचारखेड़ा)	चित्र २९	२८x१८x९ सैंटीमीटर (कटिंघरा)
चित्र २७	३७x१९x९.५ सैंटीमीटर (कटिंघरा)	चित्र ३०	१८x१३x६ सैंटीमीटर (अहिच्छत्रा)
चित्र २८	३४x२०x८ सैंटीमीटर (कटिंघरा)		

२०-२५, ३८. सुग्रीव की वानर सेना–

जब हनुमान् ने लंका से लौटकर राम और सुग्रीव के आगे सीता की दुरवस्था का वर्णन किया तो राम ने सुग्रीव को कहा कि वह अपनी वानर सेना को तैयार करे, जिससे लंका पर आक्रमण करके सीता को छुड़ाया जा सके।

ते वानरगणाः सर्वे समुत्पत्य महौजसः ॥२२॥
शतैः शतसहस्रैश्च कोटिभिश्चायुतैरपि ॥२४॥
–वाल्मीकीयरामायण, युद्धकाण्ड सर्ग ४

तब वे सब महाबली वानर पर्वतों से निकलकर चलने लगे। उस सेना में सैंकडों, हजारों, लाखों वानर थे।

कटिंघरा से प्राप्त सात मृन्मूर्तियों में वानरसेना के विभिन्न दृश्य दिखाये गये हैं। इनका आकार इस प्रकार है–

२६-३०. समुद्र का उफान :–

जब श्रीरामचन्द्र जी सेना सहित समुद्र के किनारे पहुंचे तो उफनते हुए समुद्र को देखकर उसके पार जाने का उपाय सोचने लगे। उफनते हुए उस समुद्र मे बड़े-बड़े मच्छ आदि समुद्री जीव बाहर-भीतर आते जाते दिखाई दे रहे थे।

तोयवेगः समुद्रस्य समीनमकरो महान् ।
स बभूव महाघोरः समारुतरवस्तथा ॥२८॥
महोर्मिमालाविततः शंखशुक्तिसमावृतः ।
सधूमः परिवृत्तोर्मिः सहसासीन्महोदधिः॥२९॥
–वाल्मीकीयरामायण, युद्धकाण्ड, सर्ग २१

मछलियों और मगरमच्छों सहित महासागर के जल का महावेग सहसा अत्यन्त भयंकर हो कर तूफान का कोलाहल हो गया। प्रचण्ड वायु के कारण बड़ी-बड़ी लहरों से समुद्र व्याप्त हो गया। शंख-सीपियां ऊपर आ गये, धुंआ उठने लगा और समुद्र में बड़ी-बड़ी तरंगें चक्कर लगाने लगीं।

समुद्र के इस उफान को नचारखेड़ा और कटिंघरा से प्राप्त मृन्मूर्तियों में सजीव रूप से चित्रित किया

है। (चित्र २६-३०)

इस मंयकर समुद्र पर विजय पाने के लिए श्रीराम ने समुद्र पर पुल बनाने का निश्चय किया और उसके लिए नल-नील को नियुक्त किया गया। जब नल-नील के उद्योग से समुद्र पर लंका का पुल बनकर तैयार हो गया तो उस पर से होती हुई वानर सेना लंका पहुंच कर युद्ध में रत हो गई।

३१. इन्द्रजित् का युद्ध में जाना :-

जब लक्ष्मण ने अतिकाय नामक राक्षस के साथ घोर युद्ध करके उसका वध कर दिया तो चिन्तित हुए रावण ने लंका के मुख्य-मुख्य स्थानों की रक्षा के लिए विशेष-विशेष राक्षस वीरों को नियुक्त करके राम के भय के कारण यह आदेश दिया कि लंका का मुख्य द्वार बन्द कर दिया जाये और जहां सीता रक्खी हुई है, उस अशोकवाटिका में जो भी व्यक्ति प्रवेश करे अथवा बाहर जाये उन सबकी सूचना होनी चाहिये।

तद्भयाद्धि पुरी लंका पिहितद्वारतोरणा ।
अप्रमत्तैश्च सर्वत्र गुल्मे रक्ष्या पुरी त्वियम् ॥१२॥
अशोकवनिका चैव यत्र सीताभिरक्ष्यते ।
निष्क्रमो वा प्रवेशो वा ज्ञातव्यः सर्वदैव नः ॥१३॥

—वाल्मीकीयरामायण, युद्धकाण्ड, सर्ग ७२

जब युद्ध में रावण का भाई और पुत्र मारा गया तो रावण के पुत्र इन्द्रजित् ने युद्ध में जाने का उत्साह दिखाया और प्रतिज्ञा की कि अब मैं युद्ध में राम और लक्ष्मण को बाणों द्वारा अवश्य मार गिराऊंगा।

समारुरोहानिलतुल्यवेगं
रथं खरश्रेष्ठसमाधियुक्तम् ॥८॥
समास्थाय महातेजा रथं हरिरथोपमम् ।
जगाम सहसा तत्र यत्र युद्धमरिन्दमः ॥९॥

—वाल्मीकीयरामायण युद्धकाण्ड, सर्ग ७३

वायुवेग से चलनेवाले और श्रेष्ठ गर्दभों से जुते हुए रथ पर बैठकर महातेजस्वी इन्द्रजित् अचानक युद्धभूमि में जा पहुंचा।

इस उक्त वर्णन को नचारखेड़ा से प्राप्त मृन्मूर्ति में उकेरा गया है। इसमें इन्द्रजित् रथ पर आरुढ़ है, रथ में घोड़े जुते हैं, सारथि के पीछे धनुषबाण और खड्ग लिये हुए इन्द्रजित् विराजमान है। मृन्मूर्ति की ऊपरवाली पट्टी पर इन्द्रजित् नाम खुदा है। आगे का लेख टूट गया है। इस मूर्ति पर गृहस्वामी ने अनिष्ट रोकने की आशंका से सीमेंट पोत दिया था। सावधानी से सीमेंट हटाने पर भी सीमेंट की कठोरता के कारण मृन्मूर्ति का बहुत भाग चिपक कर एकाकार होने से सीमेंट के साथ उतर गया। इस कारण मूर्ति विकृत हो गई है। इसका आकार ४०×३४×१० सैंटीमीटर है (चित्र ३१)।

३२. नागपाश में बद्धराम :-

लंका के युद्ध में अंगद ने रावण के पुत्र इन्द्रजित् को पराजित कर दिया। पराजित होने पर मायावी युद्ध में प्रवीण इन्द्रजित् ने राम-लक्ष्मण को नागपाश से बांधकर मूर्च्छित कर दिया।

अदृश्यसर्वभूतानां कूटयोधी निशाचरः ।
बबन्ध शरबन्धेन भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥३७॥
—वाल्मीकीयरामायण, युद्धकाण्ड, सर्ग ४४

माया के द्वारा समस्त प्राणियों से अदृश्य होकर कूटयुद्ध करनेवाले इन्द्रजित् निशाचर ने युद्धभूमि में राम-लक्ष्मण दोनों भाइयों को सर्पाकार बाणों के बन्धन से बांध लिया।

इस मृन्मूर्ति का चित्र प्राचीन भारत में यौधेय गणराज्य पुस्तक के चित्रफलक ७४, चित्र ९८ से लेकर यहां प्रकाशित कर रहे हैं। सन्धाय से प्राप्त इस मृन्मूर्ति में राम को पांच सर्पों ने बांध रक्खा है। ये वास्तविक सर्प न होकर सर्पाकार में बने हुए विषयुक्त बाण ही प्रतीत होते हैं, जिनके विष से प्रभावित होकर सैनिक मूर्च्छित हो जाते थे। इस फलक के टूटे हुये अनेक टुकड़े बुरी तरह रौंदे जाने से वे ऐसी अवस्था में नहीं थे कि जोड़े जा सकें। पुनरपि पैरों पर भी नागपाश लिपटे हुये स्पष्ट दिखलाई पड़ते थे। यहां न जाने कितनी ही कलाकृतियां इसी तरह नष्ट हो गई हैं। यहां भी निश्चितरूप से कोई बड़ा मन्दिर रहा होगा जिस पर ये मृत्फलक लगाये गये थे। सम्भवतः सम्पूर्ण रामायण की प्रमुख घटनाओं का वर्णन उन पर अंकित था। (इस पुस्तक में चित्रफलक २२, चित्र ३२)।

३३. मकराक्ष राक्षस का वध–1

लंका में राम और रावण की सेना में घोर संग्राम के चलते हुए अधिकतर राक्षस ही परलोक गमन कर रहे थे। उसी समय बालीपुत्र अंगद ने कम्पन और प्रजंघ का, द्विविद ने शोणिताक्ष का, मैन्द ने यूपाक्ष का, सुग्रीव ने कुम्भ का और हनुमान् ने निकुम्भ राक्षस का वध करके राक्षस सेना को महती हानि पहुंचाई। इसके अनन्तर रावण ने अपने भाई खर के पुत्र मकराक्ष को राम के विरुद्ध युद्ध में भेजा। मकराक्ष का पिता खर शूर्पणखा प्रकरण में राम के हाथों दण्डकारण्य में पहले ही मारा जा चुका था, उसने अपने पिता की हत्या का बदला चुकाने के अभिप्राय से अति क्रोधित होकर राम पर आक्रमण किया। परन्तु राम ने भी राक्षसों का संहार करने में ढिलाई नहीं बरती।

भित्त्वा रथं शरै रामो हत्वा अश्वानपातयत् ।
विरथो वसुधास्थः स मकराक्षो निशाचरः ॥३०॥
—वाल्मीकीयरामायण, युद्धकाण्ड, सर्ग ७९

राम ने अनेक बाणों से मकराक्ष के रथ को छिन्न-भिन्न करके घोड़ों को भी मार किया। रथहीन होकर निशाचर भूमि पर ही खड़ा होकर युद्ध करने लगा।

सन्धाय (यमुनानगर) से प्राप्त अति सुन्दर इस मृन्मूर्ति में राम और मकराक्ष का युद्ध प्रदर्शित है।

मकराक्ष की आंखें और जबड़ा मगरमच्छ के सदृश तथा शेष शरीर अश्व की भांति बनाया हुआ है। राम की बाईं भुजा और कोहनी मकराक्ष के मुख में है तथा बायें पैर से मकराक्ष का पेट दबा रक्खा है। नीचे रथ का घोड़ा मरा पड़ा है। राम ने लंगोट तथा आधी धोती बांधी हुई है। राम के शरीर का सौष्ठव, कुण्डल तथा कण्ठहार अति उन्नत कला के प्रतीक हैं। राम ने सिर पर जो शिरस्त्राण धारण किया हुआ है, उसके पीछे से केशराशि कान और दायें कन्धे पर लटकती हुई दिख रही है। यह चित्र और वर्णन प्राचीन भारत

में यौधेय गणराज्य, (पृष्ठ १९७-१९८, चित्रफलक ७३, चित्र ९७) से संकलित किया है। (इस पुस्तक में चित्र संख्या ३३)

३४. रामायण के विभिन्न पात्र :-

इन मृन्मूतियों से अतिरिक्त कुछ टूटे फूटे फलकों के टुकड़े मिले हैं, इनमें राम, लक्ष्मण और हनुमान्, आदि वानरयोद्धा चित्रित हैं। इनका चित्र देखकर पाठक कुछ अनुमान लगा सकते हैं कि वस्तुतः मूल रूप में ये किस प्रकार के रहे होंगे।

चित्र संख्या	पहचान	प्रप्ति स्थान	आकार
३४	राम?	अहिच्छत्रा	१२×७×१० सैंटीमीटर
३५	राम?	कटिंघरा	२०×१६×६ सैंटीमीटर
३६	योद्धा	कटिंघरा	२२×१५×१३ सैंटीमीटर
३७	गन्धर्व	कटिंघरा	३३×३३×८ सैंटीमीटर
३८	वानर सैनिक	कटिंघरा	२०×१७×१० सैंटीमीटर
३९	राम?	अहिच्छत्रा	१६×१९×९ सैंटीमीटर
४०	चादर की चुन्नटों से ढका हाथ	नचारखेड़ा	१३×१०×४ सैंटीमीटर
४१	राम, लक्ष्मण?	भादरा	२७×२४×१२ सैंटीमीटर
४२	हनुमान्	हाठ (जींद)	२८×१५×१२ सैंटीमीटर

४३. कनिष्क की ताम्र मुद्रा पर बना (ओआडो) वायुदेवता हनुमान् का चित्र। इसमें हनुमान् को पूंछरहित दिखाया गया है। पूंछवाले हनुमान् की कल्पना कुषाणशासक कनिष्क के उपरान्त किसी ने की होगी। कनिष्क का काल १३५६ वर्ष ईसा पूर्व (१४१३ वर्ष विक्रमपूर्व) है।*

श्री राम और रामायण से सम्बन्धित ऊपरवर्णित मृन्मूर्तियां के परिशीलन से यह स्पष्ट है कि राम और रामायण का अस्तित्व सर्वथा ऐतिहासिक और प्रामाणिक है। हमारा यह प्रयास अतिसीमित साधनों का परिणाम है। यदि भारत सरकार का पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग अथवा प्रान्तीय संग्रहालय इस ओर यत्न करके उक्त स्थलों का उत्खनन कार्य करवा सकें तो रामायण की प्रामाणिकता को सिद्ध करनेवाली शतशः मृन्मूर्तियां प्राप्त हो सकती हैं। उन पर उत्कीर्ण लेखों, श्लोकों और नामों की ऐतिहासिकता उपलब्ध रामायण से पुष्ट की जा सकती है। भूगर्भीय उथल-पुथल, जल स्तर के ऊपर आने और लाखों वर्ष पुराने अवशेषों का प्राकृतिक रूप से क्षरण होने से उनके न मिलने पर यह नहीं कहा जा सकता कि इनका अस्तित्त्व था ही नहीं। उपलब्ध साहित्य भी राम आदि के अस्तित्त्व का महत्त्वपूर्ण प्रमाण है। इनका बुद्धिपूर्वक विवेचन करने से सत्यता के निकट पहुंचा जा सकता है।

--✱✱✱✱--

* डॉ॰ डी॰एस॰त्रिवेद॰ इंडियन क्रोनोलॉजी, पृष्ठ २०

उपसंहार

अंग्रेजों द्वारा भारतवर्ष पर राज्य स्थापित करने से पूर्व भारत पर कुषाण, यूनानी, क्षत्रप, हूण और मुसलमानों ने आक्रमण भी किये और राज्य भी स्थापित किये, किन्तु भारत की प्राचीन संस्कृति, सभ्यता और लिखित ऐतिहासिकता को नकारने अथवा इसे दूषित करने की कुचेष्टा किसी ने भी नहीं की। इनके समय में भी भारतीय जनता में अपने पूर्वजों तथा अपनी संस्कृति के प्रति पूर्ण आस्था बनी रही।

इस सत्यता को भारत के जनमानस से दूर करने के लिये अंग्रेजों ने कूटनीति का आश्रय लेकर भारतीय संस्कृति, सभ्यता और ऐतिहासिक तथ्यों को जंगली, अनपढ़ लोगों द्वारा कल्पित की गई बताना आरम्भ करके इसी प्रकार के ग्रन्थ लिखकर उन्हें पाठ्यक्रम में लगाकर कोमलमति छात्रों में उनकी अपनी ही संस्कृति, सभ्यता और इतिहास के प्रति घृणा का भाव भरने का सफल प्रयास किया, इसीलिये पाश्चात्य शिक्षा पद्धति से पठित समुदाय भी प्रायशः रामायण और महाभारत को काल्पनिक मानता है। एक असत्य का प्रचार लम्बे समय तक योजनाबुद्ध तरीके से जब किया जाता है तो भावी पीढ़ियां उसे ही सत्य मानने लग जाती हैं। दुर्भाग्य से प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति के प्रति अंग्रेजों ने यही खेल खेला और वे अपने कार्य में पर्याप्त सफल भी हुए।

एक विचित्र बात देखिये प्राचीन भारतीयों द्वारा लिखा इतिहास तो काल्पनिक कथा तथा अंग्रेजों द्वारा लिखा गया भारतविरोधी साहित्य सच्चा माना जाये। यह कितनी गहरी चाल है। इनके ग्रन्थ काल्पनिक और झूठे क्यों नहीं माने जायें, इनकी बातों का क्या प्रमाण है? भारतीय इतिहास की सत्यता हेतु ये पुरातात्त्विक प्रमाण मांगते हैं तो इनकी बातों के पुरातात्त्विक प्रमाण कहां है कि रामायण और महाभारत नहीं हुए? क्या भूमि में दबे ऐसे प्रमाण मिले हैं जिन पर यह लिखा हो कि आर्य भारत में बाहर से आये, राम और कृष्ण नहीं हुए इत्यादि? यदि इनका लिखा झूठा साहित्य प्रमाण हो सकता है तो प्राचीन ऋषियों द्वारा लिखा गया सत्य साहित्य प्रमाण क्यों नहीं माना जाये? उसमें क्या आपत्ति है?

अस्तु! भारत सरकार के पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग ने शपथपत्र देकर यह कहना चाहा है कि राम और रामायण का ऐतिहासिक कोई प्रमाण नहीं है।

इसके लिए हमारा कथन है कि ऐतिहासिक प्रमाण अनेक प्रकार के होते हैं, लिखित इतिहास, परम्परा, जनश्रुति, वंश परम्परा तथा पुरातत्त्वीय प्रमाण। लिखित इतिहास शब्दप्रमाण के अन्तर्गत आते हैं, जनश्रुतियों से अनुमान प्रमाण सिद्ध होता है तथा पुरातत्त्वीय प्रमाण से इन्हें पुष्टि मिलती है। यह आवश्यक नहीं है कि सभी प्रमाण भूमि में दबे हुए ही हों। प्राकृतिक वस्तु की सीमा होती है, वह समय पाकर नष्ट होती रहती है, उसे कितने समय तक रखा जा सकता है? प्रकृति से बनी वस्तु की नश्वरता अवश्यम्भावी है, इसीलिए उसकी प्रामाणिकता को दीर्घकाल तक सुरक्षित करने के लिए लिखित रूप का सहारा लिया जाता है।

भारत के प्राचीन ऐतिहासिक खण्डहरों को यदि पूर्णरूप से खोदा जाये तो उनमें रामायण, महाभारत आदि की ऐतिहासिकता के पुरातात्त्विक प्रमाण भी मिल सकते हैं।

इस विषय में स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती (आचार्य भगवानदेव) गुरुकुल झज्जर ने पर्याप्त अन्वेषण किया और रामायाण, महाभारत से सम्बद्ध अनेक मृन्मूर्तियां (टैराकोटा)प्राप्त कीं। सिरसा, हाठ, नचारखेड़ा (हिसार), जीन्द, सन्धाय (यमुनानगर), कौशाम्बी (इलाहाबाद), अहिच्छत्रा (बरेली), कटिंघरा (एटा) और भादरा (श्रीगंगानगर) से ऐसे अनेक पुरातत्त्वीय प्रमाण प्राप्त हुए हैं जिनसे सिद्ध होता है कि श्रीराम, सीता, सुग्रीव, हनुमान्, जाम्बवन्त, बाली, सुग्रीव और

रामायण की ऐतिहासिकता सिद्ध है। इनका प्रमाण गुरुकुल झज्जर के पुरातत्त्व संग्रहालय में देखा जा सकता है। इन

१. राम, सीता, लक्ष्मण का पंचवटी गमन
२. मारीचमृग
३. त्रिशिरा राक्षस द्वारा खर-दूषण से विचारविमर्श और राम द्वारा चौदह राक्षसों के वध का वर्णन
४. रावण द्वारा सीताहरण
५. सुग्रीव आदि द्वारा सीता को आभूषण फैंकती को देखना
६. सुग्रीव द्वारा श्रीराम का स्वागत
७. सुग्रीव-बाली युद्ध
८. श्रीराम द्वारा बाली का वध
९. हनुमान् द्वारा अशोक-वाटिका (प्रमदावन) का विध्वंस
१०. त्रिशिरा-राक्षस का वध
११. रावणपुत्र इन्द्रजित् का युद्ध में जाना

मृन्मूर्तियों पर गुप्तकाल से पूर्व की लिपि में वाल्मीकीय रामायण के श्लोक भी लिखे हुए हैं। ये श्लोक आज भी रामायण में मिलते हैं।

उपर्युक्त स्थानों से प्राप्त मृन्मूर्तियों में निम्नलिखित दृश्य अंकित हैं-

इस प्रकार के ४२ दृश्य प्राप्त हुए हैं।

जो व्यक्ति राम के अस्तित्व का निषेध करते हैं, उन्हें विचारना चाहिये कि श्री राम, सीता, हनुमान् आदि से सम्बन्धित सैंकड़ों ग्रन्थों की रचना हुई है। इनमें संस्कृत साहित्य, बौद्ध साहित्य, जैन साहित्य, हिन्दी साहित्य, गुजराती, तमिल, मलयालम, कन्न्ड़, तेलुगु, असमिया, बंगला, उर्दू, अरबी, फारसी आदि में रामकथा और रामायण की रचनायें हुई हैं। यूनान के कवि होमर का प्राचीन इलियड काव्य और रामायण एक ही हैं। बाली, सुमात्रा, इण्डोनेशिया के पुराने मन्दिरों में रामायण कथा के दृश्य अंकित हैं।

अकबर ने अपनी एक स्वर्णमुद्रा पर राम-सीता को चित्रित किया था। धार और रतलाम राज्य की मुद्राओं पर हनुमान् अंकित है। कुषाण सम्राट् कनिष्क ने अपनी मुद्रा पर वादु=वायु देवता हनुमान् को स्थान दिया था। सन्तों द्वारा प्रचालित पीतल की मुद्रा पर राम आदि चारों भाई, सीता और हनुमान् चित्रित हैं।

श्री रामचन्द्र का काल-

भारतीय प्राचीन परम्परा के अनुसार श्रीराम चौबीसवें त्रेता और द्वापर के सन्धिकाल में हुए हैं-

त्रेतायुगे चतुर्विंशे रावणः तपसः क्षयात् ।
रामं दाशरथिं प्राप्य सगणः क्षयमेयिवान् ॥

-वायुपुराण ७०.४८

महाभारत में भी लिखा है-

सन्धौ तु समनुप्राप्ते त्रैताया द्वापरस्य च।
रामो दाशरथि ....

-शान्तिपर्व ३४३.१६

यदि राम को इस त्रेतायुग की समाप्ति परँ भी मानें तौ इस कलियुग से पूर्व ८६४००० वर्ष का द्वापरयुग बीत गया

आपैर इस कलियुग के ५१०७ वर्ष बीत चुके हैं। इस प्रकार श्रीराम आज से ८६९१०७ वर्ष पूर्व विद्यमान थे। यदि चौबीसवें त्रेतायुग की समाप्ति पर राम की स्थिति मानें तो अब अट्ठाईसवें कलियुग तक १८१४९१०७ वर्ष राम को व्यतीत हो गये।

४३२०००० वर्षों की एक चतुर्युगी होती है।

४३२००० वर्ष का कलियुग

८६४००० वर्ष का द्वापरयुग

१२९६००० वर्ष का त्रेतायुग

१७२८००० वर्ष का सतयुग

४३२०००० वर्ष = १ चतुर्युगी (तेतालीस लाख बीस हजार वर्ष)

वैवस्वत मनु की चौबीसवीं चतुर्युगी के अन्त में राम हुए। चौबीसवीं चतुर्युगी का द्वापरयुग, कलियुग, २५वीं, २६वीं, २७वीं चतुर्युगी पूरी, वर्तमान अट्ठाईसवीं चतुर्युगी के सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और इस कलियुग के आज तक बीते हुए ५१०७ वर्ष, इन सब का जोड़ १८१४९१०७ (एक करोड़ इक्यासी लाख, उनञ्चास हजार एक सौ सात वर्ष) होता है। दूसरे पक्ष में इतने वर्ष पूर्व राम की विद्यमानता थी।

इतने सुदीर्घ काल में प्रकृति से बने भवन तथा मुद्रा आदि का अस्तित्व नहीं रह सकता। इसलिए यह दुराग्रह करना कि श्रीराम और अयोध्या से सम्बन्धित कोई वस्तु नहीं मिली, इसलिए राम नहीं हुए यह कहना हास्यास्पद है। आज से ५०० वर्ष बाद जनता यह कहे कि महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू नहीं हुए ये सब काल्पनिक हैं, तो आपके पास क्या उत्तर होगा? इसलिए किसी वस्तु की सिद्धि हेतु पुरातत्त्व के साथ लिखित साहित्य का भी महत्त्व कम नहीं अपितु अधिक ही होता है।

अतः हमें विदेशी शिक्षा से प्रभावित होकर अपने पूर्वजों के अस्तित्व को नकारकर कृतघ्नता का पात्र नहीं बनना चाहिये। विदेशी जंगली लोगों को प्राचीन भारत का गौरव सहन नहीं हुआ। इसीलिए वे इसे काल्पनिक कहें तो क्या आश्चर्य है।

भारत में एक वर्ग ऐसा भी है जो रावण के अस्तित्व को स्वीकार करके उसकी पूजा करता है। यही वर्ग राम और राम द्वारा निर्मित सेतु का निषेध करता है। उनसे पूछना चाहिये कि जब रावण हुआ है और राम नहीं तो रावण ने तथा उसके भाई, पुत्र और अन्य राक्षसों ने युद्ध किससे किया और उनकी मृत्यु किसके द्वारा हुई?

भारतीय इतिहास में राम द्वारा निर्मित सेतु का उल्लेख मिलता है। अब इसे उपग्रह द्वारा भी सिद्ध कर दिया तो भी इस ऐतिहासिक तथ्य को न मानकर उसे तोड़ने का प्रयत्न करना इतिहास को नष्ट करने जैसा कुकृत्य है, जिस पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग का यह उत्तरदायित्व है कि प्राचीन स्मारकों और ऐतिहासिक स्थलों की सुरक्षा की जाये, जब वही राम, राम सेतु और रामायण की ऐतिहासिक का निषेध करे तो इस सेतु की सुरक्षा के लिए वे यत्न करेंगे ऐसा सोचना स्वयं को भुलावे में रखना है। ऐसे अनधिकारी व्यक्ति को पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग का निदेशक बनाना भारत के लिए अपमान की बात है।

इसलिये भारतीय जनता को ऐसे लोगों के वक्तव्यों से सावधान रहना चाहिये जो भारतीय इतिहास और संस्कृति को नकारकर हमें हीन भावना से ग्रस्त देखना चाहते हैं।

१. मुद्रांकित पञ्जिका में लिखा है–

(त्रेतायुगे) तत्र राजानः सूर्यवंशीयबाहुक-सगर-अंशुमत्-असमञ्जस-दिलीप-भगीरथ-अज-दशरथ-रामचन्द्र-कुशी-लवा एते चक्रवर्तिनः। ये ११ राजा चक्रवर्ति हुए हैं।

२. साधुसम्प्रदाय द्वारा चलाई गई धार्मिक मुद्रा पर लेख–
रामलछमनजानकजवल हनमनक
(संवत्) ५१७४०, आज से प्रायः दो सौ वर्ष पूर्व का यह श्रीराम का संवत् है।
मुद्रा के मुखभाग पर राम-सीता राजछत्र के नीचे सिंहासनासीन तथा पृष्ठभाग पर राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, सीता और हनुमान् के चित्र हैं।

३. जब रघुगण राजा थे, तब रावण भी यहां के आधीन था। जब रामचन्द्र के समय में विरुद्ध हो गया, तो उसको रामचन्द्र ने दण्ड देकर राज्य से नष्ट कर उसके भाई विभीषण को राज्य दिया।

४. आकाश मार्ग से विमान में बैठकर अयोध्या जाते हुए राम ने कहा–हे सीते! .... और यह देख! यह सेतु हमने बांधकर लंका में आके उस रावण को मार तुझ को ले आये।

–सत्यार्थप्रकाश, ११वां समुल्लास

५. .... रघु पीछे राजा राम हुए। इनका रावण से युद्ध हुआ। इनका इतिहास रामायण में वर्णन किया है।

–उपदेशमंजरी (पूनाप्रवचन) दसवां उपदेश पूना में (१८७५ में स्वामी दयानन्द द्वारा दिया उपदेश)

६. भूगर्भीय आन्तरिक उथल-पुथल, जलस्तर के ऊपर आ जाने और लाखों वर्ष पुराने अवशेषों का प्राकृतिक रूप से शनैः शनैः क्षरण होने से पुरातात्त्विक प्रमाण नहीं मिल पाते। उनके अभाव में साहित्य ही एकमात्र प्रमाण रह जाता है। आप्त ऋषियों द्वारा कथित शब्द प्रमाण और ऐतिह्य प्रमाण इसीलिये मान्य होता है कि वे कपोलकल्पित बातें नहीं कहते किन्तु ऐतिहासिक सत्यता का ही लेखन करते हैं।

७. रामायण-महाभारत से अतिरिक्त महाकवि कालिदास, भास, भट्टि, प्रवरसेन, क्षेमेन्द्र, राजशेखर, कुमारदास, विश्वनाथ, सोमदेव, विमलसूरि, हेमचन्द्र, हरिषेण, गुणाढ्य, नारद, लोमश, माधवदेव, तुलसीदा, सूरदास, चन्दरवरदाई, मैथिलीशरण गुप्त, केशवदास, गुरु गोविन्दसिंह, समर्थ रामदास आदि चार सौ से अधिक कवियों ने संस्कृत, पाली, हिन्दी आदि अनेक भाषाओं में राम और रामायण के पात्रों से सम्बद्ध काव्यों की रचना की है।

८. **विदेशों में रामायण–**
तिब्बतीरामायण, पूर्वी तुर्किस्तान की खोतानी रामायण, इण्डोनेशिया की ककबिन रामायण, बाली द्वीप का रामायण सम्बन्धी वायांग वोंग नाटक, जावा का सेरतराम, सेरी राम, रामकेलिंग, हिकायत सेरी राम, पातानी रामकथा, इण्डोचाइना की रामकेर्ति, ख्मेर रामायण, श्यामदेश की रामकियेन (रामकीर्ति), वर्मा के यू तो की रामयागन। प्राचीन रोम के नोनस की कृति डायोनीशिया और वाल्मीकीय रामायण के कथानक में अद्भूत समानता है।

९. कम्बोडिया के अंगकोवाट मन्दिर की भित्तिकाओं पर रामायण और महाभारत के दृश्य अंकित हैं। भारत में होनेवाली रामलीला की भांति इण्डोनेशिया के मुस्लिम कलाकार अत्यन्त भावपूर्ण ढंग से रामलीला का मंचन करते हैं।

१०. मध्य जावा के नवमशती में निर्मित परमबनन (परमब्रह्म) नामक विशाल शिवमन्दिर की भित्तिकाओं पर चारों ओर प्रस्तरशिलाओं पर रामायण की चित्रावली अंकित है।

इतने विस्तृत प्रमाणों की विद्यमानता में भी लोग यह कहें की राम का ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है, वह केवल आस्था का विषय है तो इससे बढ़कर अज्ञानता और क्या हो सकती है।

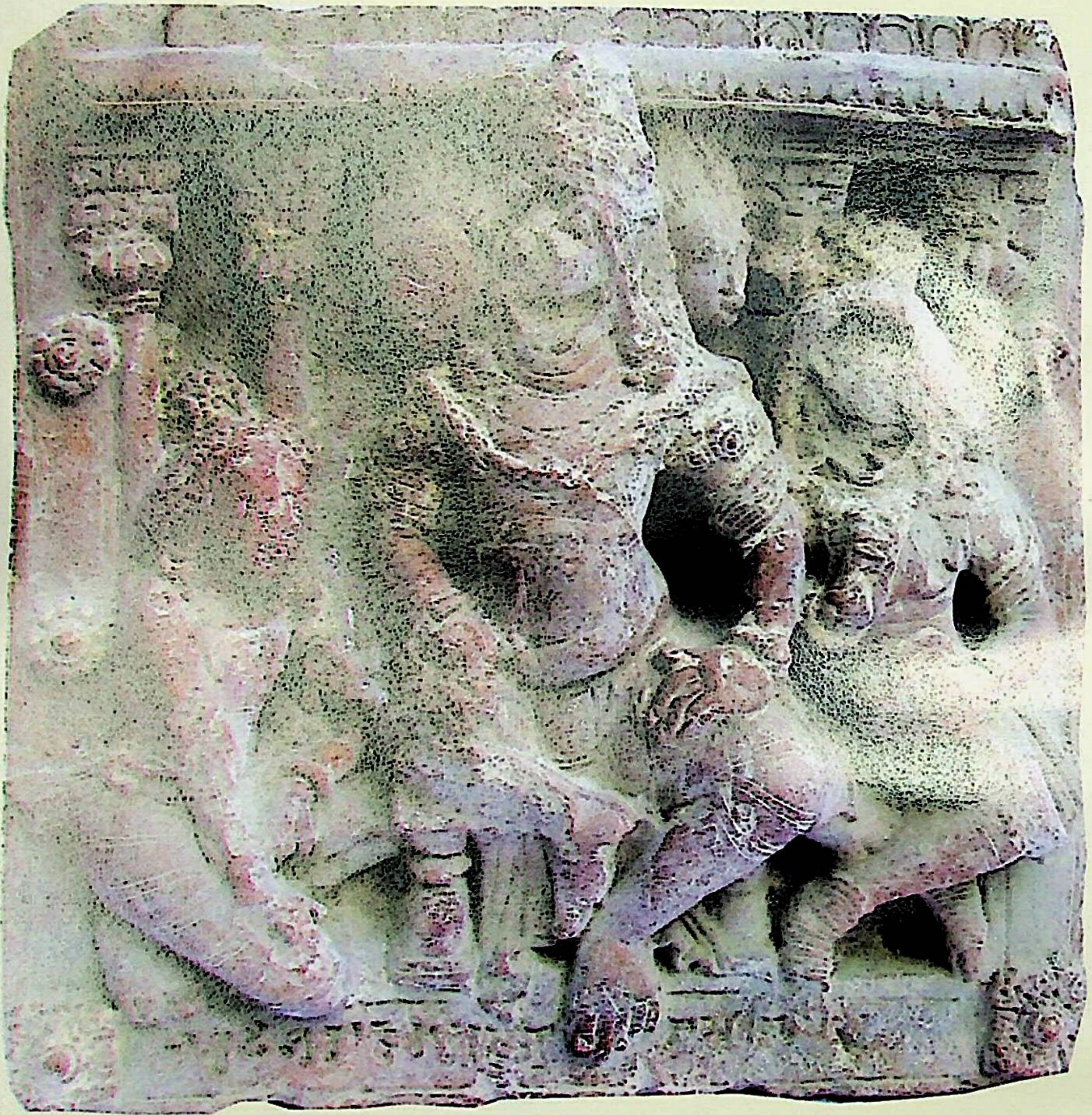
सन्दर्भ ग्रन्थ

१. वाल्मीकीय रामायण (संस्कृत) : गीताप्रेस गोरखपुर २०१७ विक्रमसंवत् प्रथम संस्करण
२. भारतवर्ष का इतिहास-प्रथम भाग : आचार्य रामदेव गुरुकुल कांगड़ी सन् १९२७ ई०
३. हनुमान् आदि वानर बन्दर थे या मनुष्य : पण्डित अमरसिंह आर्यपथिक
दि बंगाल प्रिटिंग वर्क्स, १ सिनागाग स्ट्रीट कलकत्ता, सन् १९५९ ई०
४. रामायण (बालकाण्ड) : पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर
स्वाध्याय मण्डल पारडी (सूरत) द्वितीय संस्करण, १९५५ ई०
५. वाल्मीकि रामायण, हिन्दी अनुवाद,
गीता प्रेस गोरखपुर, पंचम संस्करण : २०४२ वि०संवत्
६. Indian Chronology : Dr. D.S. Triveda Bhartiya Vidya Bhawan, Bombay, 1963
७. प्राचीन भारत में यौधेय गणराज्य : डॉ० योगानन्द शास्त्री प्रकाशक-प्राचीन भारतीय इतिहास शोधपरिषद्, गुरुकुल गौतमनगर, नईदिल्ली, १९९९ ई०
८. Tarracotta Figurines From Kausambi : S.C. Kala, The Municipal Musium, Allahabad, August 1970.
९. दक्षिणपूर्वी और दक्षिणी एशिया में भारतीय संस्कृति-डा० सत्यकेतु विद्यालंकार
प्रकाशक-श्री सरस्वती सदन, ए-१/३२, सफदरजंग इन्क्लेव,
नईदिल्ली-२९, संस्करण २००६ ई०
१०. प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान : डॉ० वासुदेव उपाध्याय चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी, सन् १९८२ ई०.
११. पाञ्चाल राज्य का इतिहास; डॉ० सुषमा आर्या, प्रकाशक-प्राचीन भारतीय इतिहास शोध परिषद्, गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली-४९, २००१ ई०
१२. रामकथा : फादर कामिल बुल्के, हिन्दी परिषद्, प्रयाग विश्वविद्यालय, सन् २००४
१३. रामायणकालिकेतिहास : डॉ० कृष्णनारायण पाण्डेयः, प्रज्ञाप्रकाशनम्, ई० १०५२ राजाजीपुरम् लखनऊ, १९९७ ई०
१४. वायुपुराण : मनसुखराय मोर, कलकत्ता
१५. ब्रह्मपुराण : मनसुखराय मोर, कलकत्ता
१६. महाभारत : गीताप्रेस गोरखपुर
१७. Bulletin of Musiums & Archaeology in U.P., No. 5-6, June-Dec. 1970 : श्री योगानन्द
१८. हिन्दुत्त्व : रामदास गौड़
१९. सत्यार्थप्रकाश : महर्षि दयानन्द सरस्वती। प्रकाशक-परोपकारिणी सभा अजमेर, सन् २००५ ईसवीं
२०. उपदेश मंजरी (पूनाप्रवचन) : महर्षि दयानन्द के १५ व्याख्यान प्रकाशक-घूडमल प्रह्लादकुमार आर्य धर्मार्थ न्यास, हिण्डौन सिटी (राजस्थान)
२१. मुद्रांकितपंजिका, शब्दकल्पद्रुम काण्ड २, प्रकाशक कालिकाता राजधानी, शकसंवत् १८०९





१. (श्री राम), सीता, लक्ष्मण
पंचवटी की ओर जाते हुए
नचारखेड़ा (हिसार) से प्राप्त



२. त्रिशिरा राक्षस
खर और दूषण से विचार विमर्श करते हुए
नचारखेड़ा (हिसार) से प्राप्त



३. त्रिशिरा राक्षस हंसाकृति वाले रथ पर बैठकर
युद्ध के लिए जाता हुआ
नचारखेड़ा (हिसार) से प्राप्त



४. सारथी सहित योद्धा युद्ध के लिए जाता हुआ
कटिंघरा (एटा) से प्राप्त



५. सारथी सहित त्रिशिरा राक्षस रथारूढ़ होकर युद्ध में जाता हुआ
नचारखेड़ा (हिसार) से प्राप्त

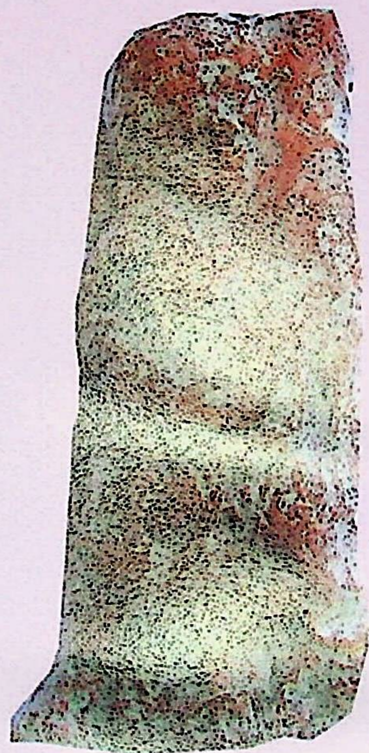


६. त्रिशिरा राक्षस का वध
सिरसा से प्राप्त



७. दौड़ते हुए मारीच मृग को देखते हुए लक्ष्मण, राम, सीता
नचारखेड़ा (हिसार) से प्राप्त





९. रावण द्वारा सीताहरण
कौशाम्बी (प्रयाग)

८. रावण द्वारा सीताहरण
अहिच्छत्रा (बरेली)



१०. रावणमुख
कौशाम्बी (प्रयाग)



११. रावण द्वारा सीता-हरण
कटिंघरा (एटा) से प्राप्त



१३. पम्पासर की शोभा (मयूर)
नचारखेड़ा से प्राप्त



१२. आकाशमार्ग से रावण द्वारा अपहृत सीता की ओर देखते हुए
--ली, सुग्रीव, जाम्बवन्त, हनुमान्
कटिंघरा (एटा) से प्राप्त



१४. सुग्रीव आदि द्वारा राम का स्वागत
कटिंघरा (एटा) से प्राप्त



१५. सुग्रीव द्वारा राम का स्वागत
अहिच्छत्रा (बरेली) से प्राप्त



१२. बाली-सुग्रीव का युद्ध
जींद से प्राप्त



१७. राम द्वारा वृक्ष की आड़ से बाली का वध
कटिंघरा (एटा) से प्राप्त

१८. प्रमदावन (अशोक वाटिका) में
सीता
कटिंघरा (एटा) से प्राप्त।





२०. युद्ध की तैयारी में वानर सेना : कटिंघरा (एटा) से प्राप्त



१९. अशोक वाटिका को उजाड़ता हुआ हनुमान् : जींद से प्राप्त



२१



२२



२३



२४

२१-२४. वानर सैनिक : कटिंघरा (एटा) से प्राप्त



२५. वानर सैनिक
कटिंघरा (एटा) से प्राप्त



२६. कुद्ध समुद्र का जन्तु : नचारखेड़ा से प्राप्त



२७



२८

क्रुद्ध समुद्र के मत्स्य : कटिंघरा से प्राप्त



२९. क्रुद्ध समुद्र का भयंकर जन्तु : कटिंघरा (एटा) से प्राप्त



३०. क्रुद्ध समुद्र का भयंकर जन्तु : अहिच्छत्रा (बरेली) से प्राप्त



३१

इन्द्रजित् युद्ध के लिए जाता हुआ नचारखेड़ा से प्राप्त



३३. राम और मकराक्ष राक्षस का युद्ध : सन्धाय (यमुनानगर) से प्राप्त



३२. पाशबद्ध राम : संधाय से प्राप्त



३४. राम ? : अहिच्छत्रा



३५. राम ? : कटिंघरा



३६. योद्धा : कटिंघरा



३७. गन्धर्व : कटिंघरा



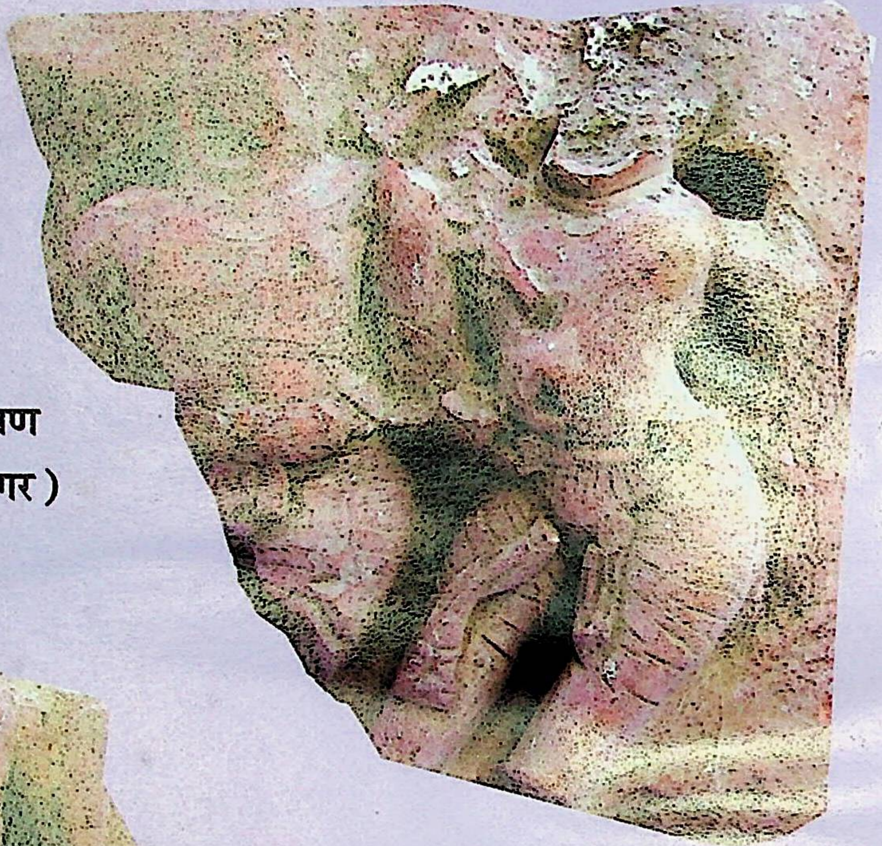
३८. वानर सैनिक : कटिंघरा



३९. राम : अहिच्छत्रा



४०. मृन्मूर्ति का हाथ
नचारखेड़ा से प्राप्त



४१. राम लक्ष्मण
भादरा (गंगानगर)



४२. हनुमान् : हाठ (जींद)



४३. कनिष्क की मुद्रा पर अंकित
ओआडो (वात देवता हनुमान्)



